महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

वर्ष-3, अंक-07 | जुलाई, 2024

दीक्षारम्भ संस्कार और भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति के उत्थान में संस्कारों का बड़ा महत्त्व है इससे किसी भी देश-विदेश की सामाजिक स्थिति के बारे में सामान्य स्थिति का अवलोकन किया जा सकता है। यद्यपि यह संस्कार शब्द बहुत प्राचीन युग का नहीं है क्योंकि इसका उल्लेख प्राचीनतम ग्रन्थों यथा ऋग्वेदादि में कहीं भी नहीं मिला है किन्तु उस समय भी आधुनिक युग के कुछ संस्कार हुआ करते थे परन्तु उनका संस्कार जैसा कोई नामकरण पूर्व में नहीं था। कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भाधान और अन्त्येष्टि जैसे कुछ धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में केवल श्रौत यज्ञों का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में विवाह, अन्त्येष्टि और गर्भाधान संस्कारों का वर्णन ऋग्वेद से अधिक मिलता है। गोपथ और शतपथ ब्राह्णों में उपनयन संस्कारों जिसे दीक्षारम्भ संस्कार समझ सकते हैं के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख हमें मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में दीक्षान्त शिक्षा का संस्कार मिलता है।

इस प्रकार गृह्यसूत्रों से पूर्व हमें संस्कारों के पूरे नियम नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि गृह्यसूत्रों से पूर्व पारम्परिक प्रथाओं के आधार पर ही संस्कार होते थे सबसे पहले गृह्यसूत्रों में ही संस्कारों की पूरी पद्धति का वर्णन मिलता है। इसमें सबसे पहले विवाह नामक संस्कार का उल्लेख मिलता है। स्मृतियों में संस्कारों का का उल्लेख एवं उसके सम्बन्धित नियम अच्छी तरह से बताये गये हैं। इनमें उपनयन संस्कार का वर्णन बडे ही विस्तार के साथ दिया गया है क्योंकि उपनयन संस्कार के द्वारा व्यक्ति ब्रह्चर्य आश्रम में और विवाह संस्कार के द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है।

संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से होता है जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य साक्ष्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर, मस्तिष्क को पवित्र करने के लिये किये जाते हैं। मनु और याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कारों से द्विजों के गर्भ और बीज के दोषादि की शुद्धि होती है। प्राचीन भारत में संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज का कल्याण करता था। ऐसी मान्यता थी कि ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते बल्कि उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे।

गौतम धर्मसूत्र में संस्कारों की संख्या चालीस बतायी गयी है परन्तु वर्तमान में सर्वमान्य संस्कार 16 माने गये हैं.गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्णभेदन, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदाध्ययन, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि। प्रथम तीन जन्म से पूर्व किये जाते हैं। अन्तिम संस्कार मरणोपरान्त होता है, शेष संस्कार जन्म होने के बाद से किये जाते हैं।

संस्कृति की भूमि संस्कार पर आधारित है। संस्कार ही संस्कृति के जन्म और उत्कर्ष का साधन हैं। इस सृष्टि से संस्कृति की आधारभूमि और व्यक्ति तथा समाज के उन्नायक संस्कारों जानकारी प्राप्त करनी परामावश्यक है। संस्कार का अर्थ है संस्कृति करना, ठीक करना, उपयुक्त बनाना था सम्यक् करना आदि। किसी साधारण या विधत वस्तु को विशेष क्रियाओं द्वारा बना देना ही उत्सव का संस्कार है। इस साधारण मनुष्य जीवन को विशेष प्रकार की धार्मिक प्रक्रियाओं द्वारा उत्तम बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय में सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में दीक्षारम्भ संस्कार बहुत उत्साह से मनाया जा रहा है राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बढ़ावा देने के लिए यूजीसी ने इसे पाठ्यक्रम आरंभ करने के पहले नए विद्यार्थियों के लिए इसे अनिवार्य कर दिया है। यह संस्कार आवागंतुक छात्रों को शिक्षकों से जोड़ने, नए पाठ्यक्रम की महत्ता को समझने और और नए अधिगम क्षेत्र के सभी विषयों से परिचय कराता है। प्राचीन भारत में यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश दिलाने और उसे धार्मिक और नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करने का कार्य करता था।

प्राचीन भारत में इस संस्कार के दौरान विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण और धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, जो शिष्य की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होते हैं। उसी परंपरा को जीवन्त करने के लिए आज भी यज्ञ, पूजन से दीक्षारम्भ संस्कार को आरम्भ किया जाता है।दीक्षारम्भ संस्कार का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता के बारे में चर्चा करें तो यह संस्कार व्यक्ति को धार्मिक और नैतिक शिक्षा प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है, जो आधुनिक समाज में भी प्रासंगिक है। दीक्षारम्भ संस्कार भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह संस्कार व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है, जो मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। इस संस्कार के माध्यम से व्यक्ति समाज में अपनी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझता और निभाता है। समग्र रूप से देखा जाए तो, दीक्षा आरम्भ संस्कार आज के आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

प्रकाशक :
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

जुलाई माह विशेष

गुरु पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा एक पारंपरिक हिंदू पर्व है जो शिक्षकों और आध्यात्मिक मार्गदर्शकों के सम्मान के लिए समर्पित है। हिंदू महीने आषाढ़ (जून-जुलाई) की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला यह त्योहार ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करने में गुरुओं (शिक्षकों) की भूमिका को स्वीकार करता है। गुरु पूर्णिमा पर महाभारत के रचयिता वेद व्यास जी का जन्म हुआ था। इस कारण से गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। वेद व्यास जी एक प्रसिद्ध ऋषि, ऋषि पराशर के पुत्र थे। महर्षि वेदव्यास को भगवान विष्णु का ही रूप माना जाता है। इन्होंने आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार के महत्व को पहचाना और परिश्रमपूर्वक वेदों को चार भागों में संपादित किया। इसीलिए इन्हें जगत का प्रथम गुरु माना जाता है। 'गुरु' शब्द का अर्थ होता है। अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाला। गुरु की महिमा अनंत और अपरंपार है। भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया है और उनके बिना ज्ञान की प्राप्ति असंभव मानी गई है। वेदों में गुरु को ब्रह्म, विष्णु और महेश का स्वरूप बताया गया है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

गुरु पूर्णिमा के दिन दान-पुण्य और गुरुओं को गुरु दक्षिणा देने का भी बहुत महत्व है। गुरु अपने ज्ञान से शिष्य को सही मार्ग पर ले जाते हैं और उनकी उन्नति में सहायक बनते हैं। यह दिन केवल शैक्षिक गुरुओं के लिए नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करने वाले सभी गुरुओं के प्रति समर्पित है। इस दिन गुरु मंत्र लेने की भी परंपरा है। संत कबीर ने भी गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए कहा है कि 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

यहाँ गुरु को गोविंद से भी ऊँचा स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। बौद्ध धर्म को मानने वाले गुरु पूर्णिमा भगवान बुद्ध की याद में मनाते हैं। इनकी मान्यता के मुताबिक भगवान बुद्ध ने इसी दिन उत्तर प्रदेश के सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था। मान्यता है कि इसके बाद ही बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी। केवल गुरु ही नहीं बल्कि अपने से बड़े और अपने माता-पिता को गुरु तुल्य मानकर उनसे सीख लेनी चाहिए एवं उनका हमेशा सम्मान करना चाहिए। इस गुरु पूर्णिमा पर, हम सभी को अपने गुरुओं के प्रतिकृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करना चाहिए और उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। गुरु के आशीर्वाद से ही हमारा जीवन सार्थक और सफल हो सकता है।

महर्षि नागार्जुन

भारतीय रसायन शास्त्र एवं रसायन विज्ञान के क्षेत्र में एक महान प्राचीन विद्वान थे। उनका योगदान रसायनिक विज्ञान को आधुनिक युग में भी प्रेरित करता है। नागार्जुन सिद्धों की परम्परा में हुए हैं। इनका समय 8वीं या 9वीं सदी है। यह समय आयुर्वेद में रस चिकित्सा, धातुवाद का है। प्रबंध चिंतामणि से पता चलता है कि नागार्जुन पादलिप्त सूरि के शिष्य थे। इसी पुस्तक के अनुसार ये पारद से स्वर्ण बनाने में सफल हुए थे (रसशास्त्र पृ. 52-53)। वे एक रसायनज्ञ या कीमियागर थे। उन्होंने रसरत्नाकर नामक पुस्तक लिखकर इस लोकप्रिय धारणा की पुष्टि की कि वे ईश्वर के दूत हैं। यह पुस्तक उनके और देवताओं के बीच बातचीत की शैली में लिखी गई थी। रसरत्नाकर में रस (पारा के यौगिक) बनाने के प्रयोग शामिल हैं। इसने देश में धातु विज्ञान और कीमिया के स्तर का भी सर्वेक्षण किया। इस पुस्तक में चांदी, सोना, टिन और तांबे जैसी कच्ची धातुओं को निकालने और शुद्ध करने की विधियों का भी वर्णन किया गया है।

'सर्वं द्रव्यं यथा दोषैः संस्कार्यं रसरूपता।

तथा तत्त्वे स्वकर्माणि संस्कुर्वीतादौ पुरुषः॥'

अर्थः 'जैसे सभी द्रव्य दोषों को हटाकर शुद्ध होते हैं, ठीक इसी प्रकार, व्यक्ति को अपने कार्यों को शुद्ध करने के लिए स्वयं को शुद्ध करना चाहिए।'

नागार्जुन ने पारे से संजीवनी और अन्य पदार्थ बनाने के लिए पशु और वनस्पति तत्वों और अम्लों और खनिजों का भी उपयोग किया। उन्होंने हीरे, धातु और मोती को घोलने के लिए पौधों से बने अम्लों का सुझाव दिया। इसमें खट्टा दलिया,पौधे और फलों के रस शामिल थे। पुस्तक में उनके और पहले के कीमियागरों द्वारा इस्तेमाल किए गए उपकरणों की भी सूची दी गई है। आसवन, द्रवीकरण, ऊर्ध्वपातन और भूनने का भी वर्णन पुस्तक में किया गया है। पुस्तक में विस्तार से बताया गया है कि अन्य धातुओं को सोने में कैसे बदला जा सकता है। यदि सोना न भी बने तो रसागम विषमण द्वारा ऐसी धातुएँ बनाई जा सकती हैं जिनमें सोने के समान पीली चमक होती है। हिंगुल और टिन जैसे कैलेमाइन से पारा जैसे पदार्थ बनाने की विधि दी गई है। नागार्जुन ने सुश्रुत संहिता के पूरक के रूप में 'उत्तर तंत्र' नामक पुस्तक भी लिखी। इसमें औषधियाँ बनाने की विधियाँ दी गई हैं। उन्होंने आयुर्वेद पर 'आरोग्यमंजरी' नामक पुस्तक भी लिखी। उनकी अन्य पुस्तकें हैं। कक्षपुट तंत्र, योगसार और योगाष्टक।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर आयोजित बैठक में उपस्थिति चिकित्सक एवं प्राध्यापकगण

दिनांक : 01 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस आयुर्वेद संकाय में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया गया। डॉ. किरन कुमार रेडी चिकित्सक परामर्श शल्य तंत्र ने बताया कि चिकित्सक दिवस हर साल 1 जुलाई को मनाया जाता है। यह दिन उन डॉक्टरों और चिकित्सा क्षेत्र में काम करने वाले सभी लोगों के सम्मान में मनाया जाता है, जो अपनी सेवा और समर्पण के माध्यम से समाज को स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दिन भारत के महान चिकित्सक और पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री, डॉ. बिधान चंद्र रॉय की जयंती और पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। डॉ. रॉय एक प्रतिष्ठित चिकित्सक और शिक्षाविद थे, जिन्होंने चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें 1961 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। साथ ही इस अवसर पर आयुर्वेद संकाय के चिकित्सकों ने अपने चिकित्सीय अनुभवों को सांझा किया। डॉ. अश्वथि नारायण शालक्य तंत्र चिकित्सक ने अपने केस प्रेजेंट किये। डॉ. अश्वथि ने बताया कि तुण्डिकेरी, अभिस्यन्द, एलर्जिक रायनाइटिस के पूर्णतया आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से रोगी को उपचार लाभ कराया। डॉ. अभिजीत ने बताया कि जोड़ो के दर्द (अर्थराइटिस) में, मधुमेह, अति गंभीर रोगों मे वो आयुर्वेद उपचार द्वारा रोगी को ठीक कर रहे हैं। आयुर्वेद उपचार पूर्णतया सुरक्षित है। कार्यक्रम के अंत में सभा को संबोधित करते हुए कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के ने कहा कि इस दिवस पर हमें सभी चिकित्सकों का आभार व्यक्त करना चाहिए और उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करनी चाहिए। उनका समर्पण और सेवा भावना हमें स्वस्थ और सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही इस दिन को मनाने से युवा पीढ़ी को चिकित्सा क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है और चिकित्सा क्षेत्र में मौजूद समस्याओं और उनके समाधान के बारे में जागरूकता फैलाना इस दिन का मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर आयुर्वेद संकाय के सभी चिकित्सक शिक्षक उपस्थित रहें।

अध्ययन परिषद की बैठक

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग

अध्ययन परिषद की बैठक में उपस्थित नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या व शिक्षिका

दिनांक : 02 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग में मंगलवार 2 जुलाई 2024 को अध्ययन परिषद की बैठक आयोजित किया गया, जिसमें गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग की प्रधानाचार्य डॉ. डी. एस. अजीथा ने ANM, GNM, BSC, MSC नर्सिंग के लिए इंडियन नर्सिंग काउंसिल द्वारा दिए गए सिलेबस पर चर्चा की गई। सिलेबस के अनुसार दो भाषाओं स्पेनिश और फ्रेंच को सम्मलित करने की योजना बनाई गई और इसमें स्ट्रेस मैंजमेंट को सातवें और आठवें सेमेस्टर में इस विषय को लागू करने के लिए अध्ययन परिषद द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई। 2024 एवं 2025 में विद्यार्थी की योग्यता को क्लिनिकल में और बेहतर करने के लिए एक्सपर्ट के साथ चर्चा की गई।

इस बैठक में डॉक्टर रेणुका, प्राचार्य, एम्स गोरखपुर, श्रीमती प्रींसी जॉर्ज प्रोफेसर कम्युनिटी हेल्थ नर्सिंग, श्रीमती रजीथा आर. एम. एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीमती सीमा रानी दास एसोसिएट प्रोफेसर मेंटल हेल्थ नर्सिंग, श्रीमती ममता रावत असिस्टेंट प्रोफेसरए मिस ईस्वरी के. असिस्टेंट प्रोफेसर ओबीजी विभाग, श्रीमती रिंकी सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, डॉ. प्रदीप कुमार राव कुलसचिव महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्लास्टिक मुक्त दिवस : शपथ ग्रहण समारोह

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

प्लास्टिक मुक्त दिवस पर शपथ ग्रहण करते प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी

दिनांक : 03 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा की वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक मुक्त दुनिया की कल्पना गंभीर चुनौती है।

जन–जन को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपने दैनिक दिनचर्या से कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। विद्यार्थियों को प्लास्टिक के वैश्विक प्रभाव पर चिंतन करने की प्रेरणा देते हुए डॉ. संदीप ने कहा की प्लास्टिक ने घर आंगन में अपनी जगह बना लिया है। पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ो वर्षो का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे है बल्कि हमारे खाद्य पदार्थो से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है।

वैकल्पिक व्यवस्था में हमे कपड़े, जुट एऔर अन्य वेस्ट मैट्रियल से बने उत्पादों का प्रयोग करने के लिए सभी को प्रेरित करना चाहिए।

व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी श्री धनंजय पांडेय ने कहा की वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पो की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है।

प्लास्टिक से मुक्ति के लिए छोटे–छोटे प्रयास से इस ज्वलंत विषय जड़ से उखाड़ा जा सकता है। जिसके लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त करने के लिए विद्यार्थियों के साथ व्यापक मुहिम चला रहा है। प्राथमिक स्तर पर प्लास्टिक की बोतल की जगह स्टील या तांबे के बोतल प्रयोग करने के अपील किया जा रहा है।

साथ ही परिसर में प्लास्टिक को प्रतिबंधित करने का भी प्रयास किया जा रहा है। जिसमे राष्ट्रीय कैडेट कोर और राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक प्लास्टिक मुक्त परिसर का समर्थन कर रहे हैं।

सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा की प्लास्टिक बैग फ्री डे की शुरुआत 2009 में जीरो वेस्ट यूरोप द्वारा किया गया। प्लास्टिक बैग पाबंदी लगाने के उद्देश्य से इस मुहिम की पहल किया गया था। सिंगल यूज प्लास्टिक से बनी वस्तुओं से महासागर, नदिया और झीलो का जल दूषित नही हो रहा है बल्कि जलीय जीव भी प्रभावित हो रहे है।

जिस गाय को हम मां कहते है उसे कचरे में प्लास्टिक परोस कर मौत से जूझने पर विवश कर रहे हैं। इसके लिए घर आंगन से कपास, जुट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग कर सकते है। प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें, और अन्य प्लास्टिक सामग्री हमारे समुद्रों में जा पहुँचती हैं और समुद्री जीवन के लिए जानलेवा साबित होती हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों समुद्री जीव प्लास्टिक के कचरे के कारण मर जाते हैं। इ सके अलावा, प्लास्टिक का जलना भी विषैले रसायनों का उत्सर्जन करता है, जो वायु और जल को प्रदूषित करता है और हमारे स्वास्थ्य के लिए खतरा बनता है। अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्री अनिल कुमार मिश्रा, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. विकास यादव, एनसीसी सार्जेंट ख़ुशी गुप्ता, दरख्शा बानो, चांदनी निषाद, खुशी यादव, प्रीति शर्मा, अमृता कन्नौजिया, अश्मिता सिंह, आदर्श मौर्य, हर्यश्व कुमार साहनी, अभिषेक चौरसिया, सीनियर अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, अनुभव, प्रियेश राम त्रिपाठी, भानु प्रताप सिंह, अंडर ऑफिसर मोती लाल, पूजा सिंह, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, आशुतोष सिंह सहित कृषि विभाग और फार्मेशी के छात्र, छात्राएं भारी संख्या में उपस्थित रहें।

एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

दिनांक : 06 जुलाई, 2024। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी।

यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं।

महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600–600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। इस संख्या को दूसरे और तीसरे चरण में और बढ़ाया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता मिल जाने से न सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र. छात्रों को अपने घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर. बस्ती–आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को 1800 बेड का अत्याधुनिक सुपर स्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला एक नया अस्पताल भी मिल जाएगा। कुलपति डॉ. वाजपेयी ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज होगा।

साथ ही एम्स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के बाद शहर का यह तीसरा बड़ा चिकित्सा संस्थान होगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यू.पी. सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी.एन. सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

डॉ. संजय माहेश्वरी की अध्यक्षता में गठित है अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी कुलसचिव डॉ. राव ने बताया कि मेडिकल कॉलेज की स्थापना और रोल मॉडल के रूप में इसके विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के मेडिकल डॉयरेक्टर डॉ. संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है।

इसमें एम्स नई दिल्ली के डॉ. संजीव सिन्हा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी. एन. सिंह, यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के डॉ. राघवेंद्र राव, डॉ. असिथ मैली पिट्सबर्ग और डॉ. केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं। यह कमेटी मुख्य रूप से देश के भीतर और बाहर स्थित

समक्ष संस्थाओं के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित करने के लिए काम करेगी। इस समिति में कुलसचिव सदस्य सचिव के रूप में रहेंगे। इसके साथ ही बनाई गई प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग यूनिट में कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी अध्यक्ष, कर्नल (डॉ.) राजेंद्र चतुर्वेदी संयोजक, डॉ. आर चंद्रशेखर प्रिंसिपल आर्किटेक्ट, जी.एन. सिंह, डॉ. संजय माहेश्वरी, ब्रिगेडियर दीप ठाकुर, आर्किटेक्ट आशीष श्रीवास्तव, आरडी पटेल, वरुण भार्गव, राजेश सिंह, एसके सिंह, ए.के. श्रीवास्तव शामिल हैं।

तत्कालीन राष्ट्रपति ने किया था विश्वविद्यालय का उद्घाटन उल्लेखनीय है कि महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था। अब मेडिकल कॉलेज के जरिये 1800 बेड के अत्याधुनिक अस्पताल का सपना भी साकार हो रहा है। पहले सत्र में 50 सीटों के साथ शुरू हो रहे मेडिकल कॉलेज के पास 450 बेड का गोरखनाथ चिकित्सालय पहले से है। जल्द ही इसमें 1800 बेड का नया अस्पताल भी जुड़ जाएगा। जिसके आधार पर आगामी सत्रों में मेडिकल कॉलेज में सीटों का विस्तार होगा।

प्रयोगात्मक फसल उत्पादन (खरीफ) पाठ्यक्रम — कृषि संकाय

प्रयोगात्मक फसल उत्पादन (खरीफ) पाठ्यक्रम के अंतर्गत धान की रोपाई का शुभारंभ करते माननीय कुलपति महोदय एवं धान रोपाई करते विद्यार्थी

दिनांक : 06 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अतंर्गत संचालित कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के स्नातक छात्रों ने प्रयोगात्मक फसल उत्पादन (खरीफ) पाठ्यक्रम के अतंर्गत धान के रोपाई का शुभारम्भ किया। गोरखनाथ विश्वविद्यालय अपने कृषि विद्यार्थियों को कृषि के क्षेत्र में नित नए आविष्कारों व नवाचारों के साथ उन्हें कृषि के वास्तविक परिदृश्य से अवगत कराता रहता है। धान की खेती के माध्यम से विद्यार्थी इस फसल के सम्पूर्ण प्रबंधन के बारे में अवगत होने के साथ–साथ किसानों को होने वाले वास्तविक समस्याओं से भी परिचित होंगें।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अतुल वाजपेई ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि भविष्य में भी विद्यार्थी माटी से जुड़ते हुए कृषि क्षेत्र में अपना योगदान अनवरत जारी रखें।

यह कार्यक्रम कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे एंव सहायक आचार्य डॉ. कुलदीप सिंह के देखरेख में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर कार्यक्रम में कृषि संकाय के सहायक आचार्य डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. प्रवीण सिंह, डॉ. सास्वती प्रेम कुमारी एवं कृषि विज्ञान तृतीय वर्ष के समस्त छात्र व छात्राएं उपस्थित रहें।

कार्य परिषद बैठक — महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

कार्य परिषद की बैठक में मौजूद माननीय कुलपति, कुलसचिव, पदाधिकारी व प्राध्यापकगण

दिनांक : 08 जुलाई, 2024। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों को लागू करने में रोल मॉडल के रूप में आगे बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कई प्रावधानों को प्रमुखता से लागू कर चुके इस विश्वविद्यालय में अब चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में 75 फीसद अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पीएचडी में सीधे प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। इसे लेकर सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में मुहर लग गई। कुल 85 बिंदुओं पर हुई कार्यपरिषद की बैठक में इस सत्र से ही विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस कोर्स के संचालन, 600 बेड के हॉस्पिटल निर्माण और पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लॉजिस्टिक कोर्स के संचालन को भी कार्यपरिषद की तरफ से हरी झंडी मिल गई।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के संचालन में हुई कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने सभी 85 बिंदुओं पर अनुमोदन प्रदान किया।

कार्यपरिषद ने इस विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरुप प्रतिमान बनाने का संकल्प लिया है। कार्यपरिषद ने इस शिक्षा नीति के अनुसार चार वर्षीय डिग्री कोर्स में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त अभ्यर्थी को पीएचडी में सीधे प्रवेश की मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत एक वर्षीय और दो वर्षीय एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमेस्ट्री तथा माइक्रोबायोलॉजी में प्रवेश पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी।

बैठक के दौरान एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर हर्ष जताया गया और कार्यपरिषद की तरफ से इसी सत्र से इस कोर्स के संचालन और इसके लिए विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में 600 बेड के अस्पताल के निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गई। विश्वविद्यालय के गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में फ्रेंच और स्पेनिश भाषा के अध्ययन और विश्वविद्यालय में पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लॉजिस्टिक पाठ्यक्रम के प्रस्ताव को भी कार्यपरिषद ने मंजूर कर लिया।

कार्य परिषद की बैठक में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की आचार्य डॉ. शोभा गौड़, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य रामजन्म सिंह, प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा प्रेम कुमार पांडेय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार सिंह, आयुर्वेद कॉलेज के सह आचार्य डॉ. सुमित कुमार एम.ए सहायक आचार्य डॉ. प्रिया एसआर नैयर, चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डॉ. हरिओम शरण, सीए अनिल कुमार सिंह, मुख्य अभियंता नीरज कुमार गौतम, सहायक अभियंता आशीष सिंह आदि उपस्थित रहें।

सोरायसिस पैच पर शोध

सिमरन तिवारी

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय में सोरायसिस पैच के विषय पर डॉ. प्रिया एस.आर. नायर (क्रिया शारीर विभाग) एवं डॉ. प्रज्ञा सिंह (संहिता एवं सिद्धांत विभाग) के पर्यवेक्षण में शोध करते हुए आयुर्वेद संकाय प्रथम वर्ष की छात्रा सिमरन तिवारी ने एक जागरूकता कार्यक्रम कैम्प में सोरायसिस के कारणों एवं रोकथाम के उपाय की जानकारी दी।

सिमरन ने बताया कि सोरायसिस एक दीर्घकालिक (लंबे समय तक चलने वाली) बीमारी है जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अति सक्रिय हो जाती है, इस रोग में त्वचा पर कोशिकाएं तेजी से जमा होने लगती हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं के कम होने के कारण त्वचा की परत सामान्य से अधिक तेजी से बनने लगती है, साथ ही त्वचा पर पपड़ीदार व सूजन वाले घाव हो जाते हैं, यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है ज्यादातर खोपड़ी, कोहनी या घुटने को प्रभावित करता है। डॉक्टर व वैज्ञानिक अब तक सोरायसिस के असल कारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। फिर भी कुछ सामान्य कारण हैं जो सोरायसिस के लक्षणों को ट्रिगर कर सकते हैं। आनुवंशिकी और पर्यावरणीय कारण मुख्य है।

रोकथाम एवं चिकित्सा : सोरायसिस के रोकथाम व चिकित्सा हेतु कई उपाय किये जा सकते है। सोरायसिस का उपचार बीमारी के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है।

आहारः नियमित स्वस्थ्य व संतुलित आहार सेवन द्वारा सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। ओमेगा–3 वसीय अम्लो से युक्त खाद्य पदार्थ जैसे की वसाई मछली, अखरोट और अलसी आदि सोरायसिस पैच की सूजन को कम करने मे कारगर है, साथ ही प्रोसेसड फूड कोल्ड ड्रिंक, सैचुरेटिड एवं ट्रांस फैट युक्त भोजन का सेवन करने से बचाना चाहिए। किसी भी रोग से बचाव मे स्वच्छता एक महत्वपूर्ण बिंदु है इस रोग में विशेष रूप से त्वचा की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। सौम्य, सुगंधहिन उत्पादों का प्रयोग करके सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। कठोर साबुन और सर्फ़ का प्रयोग न करें ये लक्षणों को उग्र कर सकते हैं। त्वचा मे नमी बनाए रखने हेतु एवं रूखी त्वचा से बचाने हेतु केमिकल फ्री मॉइश्चराइजर एवं लेप का उपयोग करें।

नींद और तनावः अनिद्रा एवं तनाव भी सोरायसिस रोग को उत्पन्न करने में सहायक होते है इसलिए पर्याप्त नींद और तनाव से बचाना चाहिए। बहुत समय से हो रहा तनाव सोरायसिस के लक्षणों को गंभीर कर सकता है उचित मात्रा मे आराम, नियमित व्यायाम, परिवार के साथ समय गुजार तनाव से बच सकतें है।

जीवन शैलीः सोरायसिस में जीवनशैली ऐसी होनी चाहिए बीमारी शीघ्र ठीक हो सके।

धूम्रपान एवं तंबाकू सेवनः धूम्रपान व तंबाकू उत्पादों का सेवन करने से लक्षणों को गंभीर बना सकते है। लक्षणों को पुनः उतेजित कर सकते है। धूम्रपान छोड़ने से सोरायसिस के लक्षणों को नियंत्रित किया जा सकता है।

शराबः अधिक शराब के सेवन से सोरायसिस के लक्षण प्रभावित हो जाते हैं साथ ही औषधी के प्रभाव को कम करते है। कम मात्रा में अनुशासन के साथ शराब का सेवन किया जा सकता है।

चाय और कॉफीः चाय व कॉफी के सेवन का सोरायसिस के लक्षणों पर सीधा प्रभाव नहीं है। किंतु कुछ अध्ययनों के मुताबिक अधिक चाय–कॉफी के सेवन से लक्षणों पर प्रभाव पड़ता है। सोरायसिस वाले व्यक्तियों को कम मात्रा में इनका सेवन करना चाहिए। अतः जरुरत है सोरायसिस को प्रभावित करने वाले कारणों को समझे और इसे रोकने के लिए उचित प्रतिक्रियात्मक कदम उठाये, जिससे सोरायसिस से ग्रसित व्यक्ति अपने जीवन एवं लक्षणों में सुधार ला सकता है। यदि आप सोरायसिस जैसे लक्षण अनुभव करते हैं तो तुरंत डॉक्टर से मिलेंए क्योंकि सोरायसिस का घरेलू इलाज करने के साथ–साथ चिकित्सक की सलाह भी बहुत जरूरी होती है।

एक पेड़ माँ के नाम : पौधरोपण अभियान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण करते हुए माननीय कुलपति, कुलसचिव एवं नागरिक सुरक्षा कोर की टीम

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एक पेड़ मां के नाम पौधारोपण लक्ष्य में सात हजार पौधे लगाकर प्रदेश में 36. 50 करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य में अपनी सहभागिता किया।

उच्च शिक्षा, वन विभाग, नागरिक सुरक्षा कोर एवं एनसीसी महानिदेशालय द्वारा निर्देशित एक पेड़ मां के नाम पर आज वृहद स्तर के पौधा रोपण लक्ष्य में कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव जी ने पौधा रोपण कर अभियान की शुरुआत किया।

पौधारोपण अभियान में कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए पौधरोपण आवश्यक हैं। पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से धरती वृक्षहीन होती जा रही है। जन–जन को अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर कम से कम एक पौधा निश्चित रूप से लगाना चाहिए।

कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है की हम सभी मिलकर पेड़ों की घटती संख्या को बढ़ाकर पर्यावरण को बचाने में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि पेड़ प्रकृति का छाता है अगर इस छाते को हमने काट दिया तो प्रकृति की छाव से पूरी धरती वीरान और बंजर हो जाएगी। प्रकृति के प्रति हमें संवेदनशील होना होगा।

पौधारोपण अभियान में 102 यू. पी. बटालियन राष्ट्रीय कैडेट कोर, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, कृषि विभाग, नर्सिंग विभाग, पैरामेडिकल, फर्मेशी और आयुर्वेद कॉलेज के सभी विद्यार्थियों के साथ वृहद पौधारोपण अभियान को पूरा किया।

पौधारोपण कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अकिता मिश्रा, धनन्जय पाण्डेय, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल मिश्रा, जन्मेजय सोनी, अनिल शर्मा, कैडेट सागर जायसवाल, मोतीलाल, खुशी गुप्ता, अभिषेक चौरसिया, हरयश्व साहनी, साक्षी प्रजापति, शालिनी चौहान, शिवम सिंह, अस्मिता सिंह, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, खुशी यादव, संजना शर्मा आदि ने पौधारोपण में सहयोग किया।

अतिथि व्याख्यान

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

आयुर्वेद कॉलेज में आयोजित अतिथि व्याख्यान में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए असिसटेंट प्रोफेसर शैलेन्द्र मौर्य एवं डॉ. नेहा श्रीवास्तव

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अन्तर्गत संचालित गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आयुर्वेद कालेज में संहिता सिद्धांत एवं संस्कृत विभाग द्वारा माहेश्वर सुत्राणि और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा की महत्ता विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रामा आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हास्पिटल मंधाना कानपुर से असिस्टेंट प्रोफेसर श्री

शैलेन्द्र मौर्य ने माहेश्वर सूत्राणि विषय पर कहा कि आयुर्वेद सहित सभी ज्ञान–विज्ञान संस्कृत ग्रंथों में समाहित हैं बिना संस्कृत भाषा के ज्ञान के हम भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित सभी शास्त्रों से हम वंचित रह जाएंगे।

संस्कृत भाषा के वर्णों की उत्पत्ति भगवान शिव के डमरू से उत्पन्न हुए जिन्हें आचार्य पाणिनि ने सूत्रों में माला के रूप में पिरोया है जिसे माहेश्वर सूत्र कहते हैं इन चौदह माहेश्वर सूत्रों से बहुत ही पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से क्रमबद्ध व्याकरण के विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग 4000 सूत्रों को आचार्य ने अपने ग्रन्थ अष्टाध्यायी में लिखा जिसे संसार का सबसे सर्वोत्कृष्ट व्याकरण ग्रन्थ माना गया है। आयुर्वेद को समझने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अति आवश्यक है अतः आयुर्वेद छात्रों को अनिवार्य रूप से इसे हृदय से ग्रहण करना चाहिए।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत की महत्ता विषय पर विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित प्रबुद्ध आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज लखनऊ से डॉ. नेहा श्रीवास्तव ने बीएएमएस छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है यह भारत को उत्तर से दक्षिण तक के जन को जोड़ती है। संस्कृत भाषा हम भारतवासियों को एक करने का कार्य करती है। यह संसार की सबसे शुद्ध, वैज्ञानिकी, परिष्कृत और संस्कारित भाषा है जो पढ़ने वालों को भी संस्कारित और शुद्ध करती है। आज समाज में संस्कार विलुप्त हो रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति हावी हो रही है। अहं की भावना बढ़ रही है जिससे वैमनस्य, हिंसा इत्यादि बढ़ रहें हैं। ऐसे परिवेश में संस्कृत भाषा का ज्ञान अनिवार्य हो जाता है जिसके शास्त्र हमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के ओर ले जाते हैं। पूरी वसुधा ही परिवार है यह मात्र संस्कृत भाषा बोध कराती है। आज आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बीएएमएस छात्रों को संस्कृत भाषा सहजएसरलता से जानने के लिए संस्कृत एप, विभिन्न संस्कृत टूल्स का ज्ञान अत्यावश्यक है। जिसका आचार्य बोध भी करा रहे हैं यह प्रशंसनीय है।

आज आयुर्वेद कॉलेज में एनएसएस अष्टावक्र ईकाई द्वारा नशा मुक्ति अभियान को सफल बनाने के लिए आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय के निर्देशन में बीएएमएस छात्र आशुतोष द्वारा नशामुक्ति शपथ भी दिलवाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती माता के चित्र पर पुष्पांजलि कर किया गया। क्रिया शरीर की विभागाध्यक्ष डॉ. देवी ने अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन बीएएमएस छात्र शोभित ने किया कार्यक्रम के संयोजक आचार्य साध्वी नंदन पाण्डेय ने मुख्य अतिथि, सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में आयुर्वेद कालेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के, डॉ. शान्तिभूषण, डॉ. दीपू मनोहर सहित बीएएमएस प्रथम वर्ष वागभट्ट बैच के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

नशा मुक्ति अभियान : शपथ ग्रहण कार्यक्रम — महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण करते विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिसमें कार्यक्रम अधिकारी साध्वी नन्दन पाण्डेय ने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव एवं हानियों के बारे में सभी को बताया कि किस प्रकार हम इससे बच सकते है सभी संकाय के विद्यार्थी को शपथ ग्रहण कराकर विश्वविद्यालय नशा मुक्त रखे जाने का संकल्प लिया गया जिसकी जानकारी नशा मुक्ति नोडल अधिकारी दिलीप मिश्रा में दिया। उन्होंने बताया कि युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा होते हैं तथा युवाओं की शक्ति का समाज एवं देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। अतः यह अति आवश्यक है कि नशामुक्त भारत अभियान में सर्वाधिक संख्या में युवा जुड़े। देश की इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हम आज नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एक जुट होकर प्रतिज्ञा करते हैं कि न केवल समुदाय, परिवार, मित्र बल्कि स्वयं को भी नशामुक्त कराएँगे क्योंकि बदलाव की शुरुआत अपने आप से होनी चाहिए।

इसलिए आइए हम सब मिलकर अपने जिले गोरखपुर उत्तरप्रदेश को नशामुक्त कराने का दृढ निश्चय करें। हम सभी को प्रतिज्ञा करना होगा कि अपने देश को नशामुक्त करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार हर सम्भव प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम में संकायध्यक्षडॉण्डी एस अजीथा, डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कुलदीप सिंह डॉ. कीर्ति कुमार यादव, कुंवर अभिनव सिंह राठौर, डॉ. अभिषेक सिंह, साध्वीनन्दन पाण्डेय, सुमन सिंह, कविता साहनी, कमलनयन श्रीवास्तव ओंकार, अनिल इत्यादि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहें।

आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण

फार्मेसी संकाय

फार्मेसी संकाय के नवप्रवेशित विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण देती एनडीआरएफ की टीम

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एनडीआरएफ के दल ने फार्मेसी विभाग के नव प्रवेशी विद्यार्थियों और एनसीसी कैडेट्स को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया।

एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट श्री संतोष कुमार ने आपदा प्रबंधन पर कहा कि आए दिन होने वाली भूस्खलन, भूकंप, बाढ़ आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक capacity building program (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र–छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही में बाढ़ के दौरान किन–किन उपकरणों का प्रयोग कर लोगो को कैसे बचाया जा सके। यह भी बारीकी से समझाया। इसमें आग जैसी आपदाओं में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया और साथ ही आपदाओं में प्रयोग किए जाने वाले रेस्क्यू तकनीकी फंसे हुए लोगों को निकालना उन्हें प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया गया।

देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए। 11वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक श्री मनोज कुमार शर्मा, निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहें। फार्मेशी प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम की भूमिका और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया।

अतिथि व्याख्यान

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

नवप्रवेशित विद्यार्थियों को विज्ञान के विविध शाखाओ में रोजगार पर सम्बोधित करते हुए डॉ. बृज रंजन मिश्रा

दिनांक : 22 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशी विद्यार्थियों को विज्ञान के विविध शाखाओ में रोजगार और शोध दृष्टि पर वैज्ञानिक. सी आर. एम. आर. सी. आई. सी. एम. आर., गोरखपुर के वैज्ञानिक डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने अन्वेष्की मंत्र देकर उत्साहित किया। डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने कहा कि बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमेस्ट्री और माइक्रोबॉयोलॉजी में शोध की अपार संभावनाएं है।

जैव प्रौद्योगिकी वो विषय है जो अभियान्त्रिकी और तकनीकी के डाटा और विधियों को जीवों और जीवन तन्त्रों से सम्बन्धित अध्ययन और समस्या के समाधान के लिये उपयोग करता है। इसे रासायनिक अभियान्त्रिकी, एवं जैव रसायन से संबंधित माना जाता है।

उन्होंने कहा कि इस विषय के अध्येता मेडिकल बॉयोटेक्नोलॉजी, इम्यूनोलॉजी, शोध कार्य और उच्च इंडस्ट्री में स्वयं को स्थापित कर सकते हैं। संबद्ध स्वास्थ्य विषय, चिकित्सा एवं वैज्ञानिक दृष्टि से रोचक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

व्याख्यान में वैज्ञानिक डॉ. बृज रंजन मिश्रा जी को बॉयोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपमा ओझा ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अतिथि परिचय और भूमिका डॉ. अमित कुमार दुबे ने किया। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अवेधनाथ सिंह ने किया।

व्याख्यान में प्रमुख रूप से बॉयोटेक्लोजी के विभाग अध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे, डॉ. अवैधनाथ, डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्री धनंजय पांडेय, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. के. के. यादव, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. अंकिता मिश्रा, अनिल मिश्रा सहित सभी छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

पौधरोपण एवं अतिथि व्याख्यान

कृषि संकाय

उपकृषि निदेशक श्री अरविन्द, माननीय कुलपति, प्राध्यापकगण

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री अरविन्द

दिनांक : 24 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित कृषि संकाय के नव प्रवेशित विद्यार्थियों के दीक्षारम्भ कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उप कृषि निदेशक श्री अरविन्द कुमार सिंह ने छात्रों को कृषि के वर्तमान परिवेश से अवगत कराते हुए कहा कि कृषि विधा में ली गयी शिक्षा व्यक्ति के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण की आधार शिला है। कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। उत्तर प्रदेश सरकार कृषि एवं कृषिकों के उन्नयन के लिए अनेकों योजनाएं संचालित कर रही है। उप कृषि निदेशक नें परम्परागत कृषि के साथ–साथ आधुनिक कृषि प्रणाली के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि गोरखपुर जनपद मोटे अनाज के लिए अनुकूल है, कम समय में, कम खर्चे में, किसान मोटे अनाज के पैदावार से अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकता है, मोटा अनाज स्वास्थ के लिए भी अनुकूल है। श्री सिंह ने कृषि के महत्व को चरितार्थ करते हुए कहा कि भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी मां तुल्य है, इनके सम्वर्द्धन एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य है, भारत में गुरू–शिष्य परम्परा संस्कृति की धुरी रही है, और अनुशासन उसका आधार है और हमें इस परम्परा को अनवरत जारी रखना है। श्री सिंह ने कृषि संकाय का अवलोकन करते हुए कहा कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय का कृषि संकाय कृषि शिक्षा क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रहा है और यहां मौजूद आधारभूत सुविधाएं विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है।

उपकृषि निदेशक ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय से कृषि विभाग (उत्तर प्रदेश सरकार) द्वारा मान्यता प्राप्त एफ.पी.ओ. (कृषि उत्पादक संगठन) से छात्रों को जुड़ने का आवाहन किया। विद्यार्थियों के प्रश्नो का उत्तर देते हुए श्री सिंह ने प्राकृतिक खेती के महत्व पर भी प्रकाश डाला। व्याख्यान के पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति व उप कृषि निदेशक ने विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

इस मौके पर कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी एवं विद्यार्थियों के साथ कृषि विभाग के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

अतिथि व्याख्यान

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

विद्यार्थियों को सम्बोधित करती हुई डॉ. सोनी वर्मा

दिनांक : 25 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अन्तर्गत संचालित गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आयुर्वेद कॉलेज में संहिता सिद्धांत एवं संस्कृत विभाग द्वारा त्रिसूत्र ऑफ आयुर्वेद विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रामा आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हास्पिटल मंधाना कानपुर से प्रोफेसर डॉ. सोनी वर्मा ने कहा कि स्वास्थ्य की रक्षा करना आयुर्वेद का प्रथम उद्देश्य है और द्वितीय रोगी को पूरी तरह स्वस्थ करना। त्रिसूत्र अर्थात् हेतु (कारण) लिंग

(लक्षण) और औषधि (दवा) की अवधारणा को आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य को बनाएं रखने और रोगियों की बीमारी को ठीक करने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्दिष्ट किया गया है। हेतु का अर्थ है स्वास्थ्य का कारण, कारक और साथ ही विभिन्न रोगों के एटिऑलॉजिकल कारक।

स्वस्थ व्यक्ति का पहचान शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य है जिसमें दशविधा आतुर परीक्षा (परीक्षाओं के दस गुना) शामिल हैं, सिवाय विकृति परीक्षा (रोग संबंधी जांच) के जो किसी व्यक्ति के सामान्य शारीरिक गठन और उसके स्वास्थ्य को परिभाषित करती है। जबकि रोगी में, लिंग में सामान्य, कार्डिनल या अरिष्ट का लक्षण शामिल हैं। औषध का उपयोग स्वस्थ व्यक्ति (स्वस्थवृत्त और पंचकर्म) में स्वास्थ्य को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए किया जाता है और बीमार रोगी में शोधन या शमन चिकित्सा या दोनों द्वारा उसकी बीमारी को कम करने के लिए इलाज किया जाता है।

कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन बीएएमएस छात्रा वीणा मिश्रा ने किया।

कार्यक्रम में आयुर्वेद कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के, आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. शान्तिभूषण, डॉ. दीपू मनोहर, सहित बीएएमएस प्रथम वर्ष वागभट्ट बैच के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

बी.ए.एम.एस. सुश्रुत बैच (2022-23) की द्वितीय सत्र प्रारम्भ

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलसचिव

दिनांक : 26 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज के बी.ए.एम.एस. सुश्रुत बैच (2022–23) की द्वितीय सत्र का हुआ आरम्भ।

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल कॉलेज गोरखपुर आयुर्वेद संकाय के सुश्रुत बैच (2022–23) की विश्वविद्यालय की परीक्षाएं समाप्ति उपरान्त दिनांक 26 जुलाई 2024, दिन शुक्रवार से कक्षाएं आरम्भ हुई। कक्षाएं आरम्भ होने के प्रथम दिवस महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री प्रदीप राव जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं धनवंतरी वंदना के साथ आगाज़ हुआ। दीप प्रज्ज्वलन एवं धनवंतरी वंदना के बाद गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव जी ने सभी विद्यार्थियों को नये सत्र हेतु बधाई देते हुए उनका उत्साह बढ़ाया। कुलसचिव जी ने कहा कि आयुर्वेद प्राचीन काल से वर्तमान समय तक चिकित्सा के क्षेत्र में हरदम आगे रहा है तथा हर प्रकार की बीमारी हेतु आयुर्वेद दवाओं एवं आयुर्वेदीक चिकित्सा पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है तथा आगे भी इसी प्रकार प्रयोग किया जायेगा। कुलसचिव जी ने आयुर्वेद की महत्व को विस्तार से बताया तथा विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर ध्यान केन्द्रित करने को कहा। गोरखनाथ विश्वविद्यालय आयुर्वेदिक शिक्षा व चिकित्सा के स्तर को गोरखपुर मण्डल में बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस दौरान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज गोरखपुर आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य (कार्यवाहक) डॉ. नवीन के. डॉ. गोपीकृष्णा, डॉ. रश्मी पुष्पन, डॉ. मीनी के. वी. डॉ. देवी आर नायर, डॉ. शन्तिभूषण हंदूर, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. परीक्षीत, डॉ. सर्वभौम, श्री साधवीनन्दन पाण्डेय एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित थे।

अतिथि व्याख्यान

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

दिनांक : 26 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज में दीक्षारंभ कार्यक्रम में श्रीमती सीलम बाजपेई जी ने बाल यौन शोषण पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि वर्तमान में हो रहे यौन शोषण के बारे में, यौन शोषण को पहचानना, उसके खिलाफ आवाज उठाने और रोकने के लिए बच्चो को जागरूक किया। श्रीमती बाजपेई जी ने ये भी बताया कि हम कहा पर और किन किन उपायों से इसकी सूचना पुलिस व प्रशासन को दे सकते है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पैरामेडिकल के प्राचार्य श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव जी ने की। इस व्याख्यान में पैरामेडिकल विभाग के सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

विद्यार्थियों को सम्बोधित करती हुई श्रीमती शीलम बाजपेई

अतिथि व्याख्यान

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

श्रीमती रीता श्रीवास्तव जी को स्मृति चिन्ह् भेंट करते डॉ. अमित दूबे

दिनांक : 26 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में चल रहे नवप्रवेशी विद्यार्थियों के कार्यशाला में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में रंग अभिनेत्री, संचालिका शिक्षिका श्रीमती रीता श्रीवास्तव ने स्किल डेवलपमेंट पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

श्रीमती रीता श्रीवास्तव ने कहा कि ऊंचे संकल्पो को लेकर साथ चलो, मंजिले चलकर पास तुम्हारे आयेंगी। हर व्यक्ति के अंदर जन्मजात कोई न कोई स्किल अवश्य होता है, उसे अनवरत अभ्यास से निखारा जा सकता है। अपने भीतर के सृजन को कभी भी छुपाए नहीं उसे अभियक्ति का माध्यम बनाकर अपने व्यक्तित्व को संजीवनी दीजिए।

नजरिया बदलिए नजारे बदल जाएंगे, खुद को बदलिए सितारे बदल जायेंगे। सभी नवांकुरों को कौशल विकास एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रेरणादायक व्याख्यान देते हुए उच्च शिक्षा के साथ–साथ कैसे अपने कौशल और व्यक्तित्व के विकास को निखारा जाए उस पर मार्गदर्शन किया। विद्यार्थियों के प्रश्नों का जवाब देते हुए श्रीमती रीता श्रीवास्तव ने कहा कि अपने व्यक्तित्व का विकास करे, सकारात्मक सोच ऊर्जा बनाए, प्रभावशाली संवाद के लिए लिखने और पढ़ने का निरंतर अभ्यास करें। करुणा का भाव रखे, भावनाओं पर नियंत्रण रखें, साहसी बने और विपरीत परिस्थितियों में अपना धैर्य बनाए रखें।

जीवन में विकल्प बहुत मिलेंगे मार्ग भटकाने के लिए लेकिन संकल्प एक ही काफी है मंजिल तक जाने के लिए।

श्रीमती रीता ने कहा कि भाषा कौशल का सृजन समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने–बाने को भी समृद्ध करता हैं। कलाएं भाषा कौशल, सृजन, रंगमंच और संचालन जैसे क्षेत्रों में स्किल डेवलपमेंट न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन क्षेत्रों में कौशल विकास के माध्यम से व्यक्ति अपनी रचनात्मकताएं संवाद क्षमताएं और नेतृत्व कौशल को निखार सकते हैं, जो उन्हें समाज में एक सकारात्मक और प्रभावशाली भूमिका निभाने में सक्षम बनाते हैं। स्किल डेवलपमेंट में तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ रचनात्मकता की भी आवश्यकता होती है। कला में स्किल डेवलपमेंट का एक प्रमुख हिस्सा विभिन्न तकनीकों, सामग्रियों और माध्यमों का अध्ययन और प्रयोग है। संवाद कौशल में आत्मविश्वास बढ़ाने में वाचन और लेखन का नियमित अभ्यास करना आवश्यक है। लेखन कौशल में व्याकरण, शब्दावली और सटीकता पर ध्यान दिया जाता है, जबकि वाचन में सही उच्चारण, लय और भावनाओं की अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण होती है। इसके अलावा, दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी भाषा कौशल को समृद्ध करता है और व्यक्तियों को बहुभाषी संवाद के लिए तैयार करता है। स्किल डेवलपमेंट सृजनात्मकता में नए और अनोखे विचारों का निर्माण होता है। यह किसी भी कला, विज्ञान या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य, संगीत और फिल्म जैसे कला के क्षेत्रों में सृजनात्मकता का विकास महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये माध्यम नई सोच और दृष्टिकोणों के साथ संवाद करने में सहायक होते हैं।

मुख्य वक्ता को बॉयोटेक्नोलॉजी के विभाग अध्यक्ष डॉ. अमित दूबे ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। अतिथि परिचय एवं भूमिका डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने एवं मंच संचालन डॉ. अवैधनाथ सिंह ने किया। कार्यशाला में प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. पवन कनौजिया, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय, अनिल मिश्रा, अनिल शर्मा, डॉ. धीरेंद्र सिंह सहित सभी शिक्षकगण उपस्थित रहें।

कारगिल विजय दिवस : प्रतियोगिता

राष्ट्रीय कैडेट कोर

दिनांक : 26 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय 102 यू.पी. बटालियन एन.सी.सी. यूनिट के कैडेट्स द्वारा कारगिल विजय दिवस के 25वें वर्ष (रजत जयंती) पर कारगिल युद्ध दृश्यम को पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता दिखाकर वीर योद्धाओं को नमन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित किया।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि आपरेशन विजय भारतीय शौर्य पराक्रम, त्याग बलिदान को समर्पित है। 26 जुलाई को प्रतिवर्ष मनाएं जाने वाले कारगिल युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत की याद दिलाता है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था। 84 दिनों

कारगिल विजय दिवस पर प्रजेंटेशन प्रस्तुत करती कैडेट

तक चले इस युद्ध में भारतीय सेना के 527 जवान शहीद हुए थे जबकि 1363 घायल हुए थे। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। भारतीय वीरों के त्याग, बलिदान, साहस और शौर्य को हमेशा याद रखा जाएगा।

एन.सी.सी. अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और प्रभुता की पहचान कराता है। हमें अपने कर्म क्षेत्र में डटे रहने की सीख भी देता है।

पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सीमा के अंदर घुसपैठ करके महत्वपूर्ण ऊँचाइयों पर कब्जा कर लिया था। कारगिल युद्ध भारतीय सेना के लिए एक बड़ी चुनौती थी। यह क्षेत्र अत्यंत दुर्गम था और ऊँचाइयों पर लड़ाई लड़ने के लिए विशेष तैयारी की आवश्यकता थी। भारतीय सेना ने स्थिति को संभालने के लिए 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया। 20 जून 1999 को भारतीय सेना ने टोलोलिंग की ऊँचाइयों को पुनः प्राप्त किया और 26 जुलाई 1999 को भारत ने अंतिम विजय प्राप्त कीए जिसे हम 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाते हैं। कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के कई जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी।

पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण प्रतियोगिता में, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया।

निर्णायक डॉ. पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया।

आयोजन में प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दूबे, डॉ. धीरेंद्र, डॉ. प्रेरणा अदिति, धनंजय पांडेय, अनिल मिश्रा, कैडेट मोतीलाल, प्रीति शर्मा, आशुतोष मणि त्रिपाठी, सागर यादव, चांदनी निषाद आदि उपस्थित रहें।

अतिथि व्याख्यान — गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते एवं मरीजों को परामर्श देते हुए डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांक : 27 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान (आयुर्वेद कॉलेज) में रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा 'कांसेप्ट ऑफ ट्यूबरक्लोसिस इन आयुर्वेद' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि एवं व्याख्यान कर्ता डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर, पूर्व प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय एवं विश्व आयुर्वेद परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को ट्यूबरक्लोसिस (राज्यक्ष्मा) से बचाव, उसके लक्षण एवं कारणों पर व्याख्यान दिया। डॉ. तोमर ने बताया कि आयुर्वेद में ट्यूबरक्लोसिस को राज्यक्ष्मा से जोड़ कर बताया गया है। डॉ. तोमर ने द्वितीय व्यावसायिक वर्ष के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें राज्यक्ष्मा के विभिन्न निदानों (कारणों) के बारें में पूरे विस्तृत रूप में बताया तथा इसके लक्षणों के बारे में भी विस्तृत रूप से जानकारी दी। इसके आयुर्वेद में वर्णित इलाज के बारे में भी विद्यार्थियों को बताया।

डॉ. तोमर ने बताया की ट्यूबरक्लोसिस इस समय एक वैश्विक आपातकाल की स्थिति पैदा कर रही है।

भारत इस समय दुनिया की 23 सबसे ज्यादा ट्यूबरक्लोसिस से प्रभावित देशों में प्रथम स्थान पर है, इसलिए हमें इस बीमारी के बारे में अच्छे से जान कर इसके बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए। यह इतना घातक है की प्रति मिनट भारत में इसके कारण एक जान जा रही है।

टीबी और एचआईवी के सह–संक्रमण ने स्थिति को और खराब कर दिया हैं। राज्यक्ष्मा के बारे में लगभग आयुर्वेद के सभी संहिताओं में वर्णन मिलता है तथा इसके लक्षणों एवं पूर्वरूप को देख के इसकी समानता पूर्णतः ट्यूबरक्लोसिस से होती है। इस रोग पर प्रभावी नियंत्रण में आयुर्वेद बहुत योगदान दे सकता है। इसके प्रबंधन में रसायन औषधियां बहुत फायदेमंद हैं।

अतिथि महोदय ने कहा की आयुर्वेद मानवता और मानव के कल्याण के लिए कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य (कार्यवाहक) डॉ. नवीन के., डॉ. शांति भूषण, डॉ. गिरिधर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. संध्या पाठक, डॉ सार्वभौम आदि शिक्षक एवं सभी चरक एवं सुश्रुत बैच के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपी कृष्णा ने अतिथि महोदय का एवं सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सुश्रुत बैच की छात्रा कोमल गुप्ता ने किया।

दीक्षारंभ : अतिथि व्याख्यान

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

डॉ. मिथिलेश तिवारी जी को स्मृति चिन्ह् भेंट करते डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करती डॉ. मिथिलेश तिवारी

दिनांक : 27 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशी विद्यार्थियों को विज्ञान और संगीत के अंतःसंबंध पर संगीत विशेषज्ञ डॉ. मिथिलेश तिवारी ने संगीत के प्रभाव पर विश्लेषण किया ।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित संगीत मर्मज्ञ डॉ. मिथिलेश तिवारी ने कार्यशाला में कहा कि विज्ञान में संगीत की गुरुकुल परंपरा को जीवंत करने की आवश्यकता है संगीत को गुरुकुल परंपरा की संकल्पना में जीवंत किया जाए। संगीत विषय नही आराधना है, संगीत और चिकित्सा में गहरा नाता है, चिकित्सा में संगीत की का प्रयोग किया जाए तो रोगी में चमत्कारी प्रभाव होता है। संगीत सुनने में अच्छा लगता है मन को शांति और स्थिरता देता है। संगीत मानव सभ्यता का एक पुरातन और महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैए बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों और समाजों की आत्मा का भी प्रतिनिधित्व करता है। संगीत और विज्ञान दोनों ही मानव जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं और उन्होंने हमारे समाजए संस्कृति और जीवनशैली को गहराई से प्रभावित किया है। इन दोनों क्षेत्रों का संबंध बहुत गहरा है।

डॉ. मिथिलेश तिवारी ने कहा कि संगीत का मानव मस्तिष्क और भावनाओं पर गहरा प्रभाव होता है। यह हमारी भावनाओं को व्यक्त करने, समझने व नियंत्रित करने में मदद करता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सुनने या बजाने से मानसिक तनाव कम होता है, अवसाद और चिंता की स्थितियों में सुधार होता है और आत्म–प्रशंसा और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इसके अलावा, संगीत चिकित्सा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है, जिसमें विभिन्न मानसिक और शारीरिक स्थितियों के उपचार के लिए संगीत का उपयोग किया जाता है ।संगीत शिक्षा बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक होती है। यह तार्किक विचार, गणितीय क्षमताओं और भाषा कौशल को सुधारने में मदद करता है। संगीत शिक्षा के दौरान बच्चों को अनुशासन, समय प्रबंधन और टीम वर्क जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल सिखाए जाते हैं। संगीत और विज्ञान के बीच का सबसे स्पष्ट संबंध ध्वनि विज्ञान (अकौस्टिक्स) में देखा जा सकता है। विज्ञान ने संगीत के मानव मस्तिष्क पर प्रभावों को समझने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। न्यूरोसाइंस के क्षेत्र में शोध ने यह दिखाया है कि संगीत सुनने और बजाने से मस्तिष्क के कई हिस्सों में सक्रियता बढ़ती है, जिससे याददाश्त, ध्यान और अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार होता है। संगीत के इस प्रभाव का उपयोग न्यूरोलॉजिकल रोगों के उपचार में भी किया जा रहा है। संगीत और विज्ञान दोनों ही मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं, जो न केवल हमारे ज्ञान और समझ को विस्तार देते हैं बल्कि हमारी भावनाओं, संस्कृति और समाज को भी समृद्ध बनाते हैं। इन दोनों क्षेत्रों का सम्मिलन हमें न केवल तकनीकी और शैक्षिक दृष्टिकोण से बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से भी एक समग्र विकास की दिशा में प्रेरित करता है।

मुख्य वक्ता को डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। अतिथि परिचय एवं भूमिका एवं मंच संचालन डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया। कार्यशाला में अधिष्ठाता प्रो. सुनील सिंह, डॉ. अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. पवन कनौजिया, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय, अनिल मिश्रा, अनिल शर्मा, डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. रश्मि झा सहित सभी शिक्षक उपस्थित रहें।

फ्रेशर्स पार्टी

पैरामेडिकल संकाय

फ्रेशर्स पार्टी में प्रतिभाग करती छात्राएं

दिनांक : 30 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंदर संचालित पैरामेडिकल संकाय में चल रही दीक्षारंभ कक्षाओं को आज फ्रेशर्स पार्टी 'आगमन' करके समाप्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन कर तथा गणेश वंदना व सरस्वती वंदना के साथ हुआ।

अपने संबोधन में प्राचार्य महोदय ने बताया कि आज से विद्यार्थियों के जीवन की नई शुरुआत होने जा रही है। पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक है अतः इस पाठ्यक्रम के समाप्ति के बाद

न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशो में भी कार्य कर अपनी जीविका सुगमता से चल सकते है।

कार्यक्रम में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम सीनियर बैच द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मिस्टर फ्रेशर–धनंजय विश्वकर्मा व मिस फ्रेशर पूर्वा श्रीवास्तव को बनाया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा द्वारा दिया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप अध्यापकों सहित द्वितीय वर्ष के छात्रों आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश, सुंदरी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

‘न्योफाइट्स’ : फ्रेशर पार्टी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

चयनित मिस्टर फ्रेशर कार्तिकेय श्रीवास्तव, व मिस फ्रेशर मुस्कान एवं कार्यक्रम में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

दिनांक : 31 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशी विद्यार्थियों के फ्रेशर में संस्कार और मस्ती की पाठशाला का अद्‌भुत संगम दिखा।

आयोजन की शुरुआत विभागध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे और डॉ. अनुपमा ओझा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। गणेश वंदना व सरस्वती वंदना के साथ आयोजन का आगाज हुआ। बायोकेमेस्ट्री विभागध्यक्ष डॉ. अनुपम ओझा ने कहा कि ‘न्योफाइट्स’ एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है ‘नया सदस्य’।

यह आयोजन छात्रों को अपनी प्रतिभाओं को सृजनात्मक क्षमता को प्रदर्शित करने और अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। फ्रेशर पार्टी में विभिन्न गतिविधियों, खेलों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया। जिससे नए और पुराने विद्यार्थियों ने एक–दूसरे के साथ सृजनात्मक सांस्कृतिक गतिविधियों को साझा किया। फ्रेशर पार्टी में संगीत, नृत्य, नाटक और प्रतियोगिताओं में सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

15 दिवसीय दीक्षारंभ के अंतिम दिन वरिष्ठ विद्यार्थियों ने अपने अनुज छात्र–छात्राओं का स्वागत कर सांस्कृतिक उत्सव को कला और संस्कृति के रंग से सराबोर कर दिया। सावन के कजरी गीतो से छात्र–छात्राओं ने सभी का मन मोह लिया। साथ ही नए पुराने गीतों के रिमिक्स पर सभी जी भर के थिरके, रैंप वॉक, खेल खोल में हुनर दिखाओ प्रतियोगिता में नृत्य, गीत, डायलाग, हास्य व्यंग से सभी को गुदगुदाया ।

कार्यक्रम में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम सीनियर बैच द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मिस्टर फ्रेशर कार्तिकेय श्रीवास्तव व मिस फ्रेशर मुस्कान को कड़ी स्पर्धा से निर्णायक मंडल ने चयनित किया।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील सिंह ने सभी नव प्रवेशी छात्र–छात्राओं को अकादमिक सत्र में प्रवेश की शुभकामना दिया।

कार्यक्रम का संचालन प्रशांत गुप्ता, असीफिया इकरम, आंचल पाठक, सुप्रिया शर्मा, अनुष्का द्विवेदी और आशुतोष मणि त्रिपाठी ने किया। आयोजन में प्रमुख रूप से राहुल दुबे, नवनीत जायसवाल, ठाकुर विभव राज, अभिषेक यादव, मृत्युंजय चौरसिया, आख्या दुबे, दीपिका त्रिपाठी, प्रीति शर्मा, विष्णु अग्रहरि, अशोक कुमार चौधरी, आदित्य सिंह, काव्यांजलि ने आयोजन में महती भूमिका निभाया। आयोजन में प्रमुख रूप से डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. पवन कनौजिया, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, श्री धनंजय पांडेय, अनिल मिश्रा, अनिल शर्मा, डॉ. रश्मि झा, डॉ. अखिलेश दूबे, डॉ. संदीप श्रीवास्तव, सृष्टि यदुवंशी सहित सभी शिक्षकगण उपस्थित रहें।

जुलाई माह की मुख्य बैठकें

07 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद की बैठक सम्पन्न हुई।

16 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में निम्न विषयों पर बैठक सम्पन्न हुईः–

- विश्वविद्यालय में हॉस्पिटल मैनेजमेंट का नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए जाने के सम्बन्ध में अग्रिम कार्यवाही हेतु डॉ. तरुण श्याम को अधिकृत किया गया।
- सत्र 2025–26 से बी.ए.एम.एस. की अतिरिक्त 100 सीटों का विस्तार तथा स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए जाने के सम्बन्ध में अग्रिम कार्यवाही किए जाने हेतु प्राचार्य, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) को अधिकृत किया गया।
- जनपद महराजगंज में सत्र 2025–26 से फार्मेसी का नया कॉलेज खोले जाने के सम्बन्ध में अग्रिम कार्यवाही किए जाने हेतु डॉ. शशिकान्त सिंह, प्राचार्य, फैकल्टी ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेस को अधिकृत किया गया।
- महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज में स्नातक स्तर का नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने तथा डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रमों की संख्या बढ़ाये जाने के सम्बन्ध में अग्रिम कार्यवाही हेतु श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव को अधिकृत किया गया।
- पेपर पब्लिकेशन पर विशेष ध्यान दिए जाने हेतु समस्त संकायाध्यक्ष, प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष से अनुरोध किया गया।

17 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

24 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) के पंचकर्मा थिरेपिस्ट पद पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

25 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

30 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में कामर्स विभाग के बी.बी.ए. लॉजिस्टिक के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

30 जुलाई 2024 — प्रधानाचार्य, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) की अध्यक्षता में एम.टी.एस. पद पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

31 जुलाई 2024 — माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंग्रेजी, गणित व मनोविज्ञान विषय के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

जुलाई माह के प्रमुख आयोजन

राष्ट्रीय सेवा योजना

03 जुलाई ,2024	अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस
05 जुलाई, 2024	साइबर जागरूकता कार्यशाला
20 जुलाई, 2024	नशा मुक्ति अभियान पर शपथ ग्रहण

राष्ट्रीय कैडेट कोर

16-31 जुलाई, 2024	विश्वविद्यालय में विविध विभागों और संकायों में नव प्रवेशी विद्यार्थियों से एनसीसी के मूल उद्देश्यों, कैरियर और भविष्य में सैन्य सेवा में अवसर विषय पर व्याख्यान।
20 जुलाई 2024	एक पेड़ मां के नाम वृहद पौधारोपण अभियान में एनसीसी कैडेट्स ने विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के साथ 7000 पौधारोपण किया।
20 जुलाई 2024	राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट्स ने फार्मेसी संकाय के नवप्रवेशी विद्यार्थियों के साथ आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण किया।
26 जुलाई 2024	कारगिल विजय दिवस पर कारगिल दृश्यम प्रतियोगिता में पावर प्वाइंट प्रस्तुति कर वीर शहीदों को दीप प्रज्ज्वलित कर भावांजलि अर्पण किया।

अगस्त, 2024 प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विश्वविद्यालय

00 अगस्त, 2024	नर्सिंग कॉलेज के षष्ठम् सेमेस्टर की लिखित परीक्षा (नियमित एवं पूरक)
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन कराया जाना प्रस्तावित है।
28 अगस्त, 2024	विश्वविद्यालय का तृतीय स्थापना दिवस समारोह

राष्ट्रीय सेवा योजना

12 अगस्त, 2024	अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस
20 अगस्त, 2024	सदभावना दिवस
29 अगस्त, 2024	फिट दिवस, राष्ट्रीय खेल दिवस (मेजर ध्यानचंद सिंह) जयंती

राष्ट्रीय कैडेट कोर

05–06 अगस्त, 2024	राष्ट्रीय कैडेट कोर के नव नामांकन भर्ती की आंतरिक चयन प्रक्रिया
20 अगस्त, 2024	बटालियन द्वारा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एनसीसी कैडेट्स का नव नामांकन चयन प्रक्रिया
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस ध्वजारोहण पर एनसीसी कैडेट्स द्वारा ध्वजारोहण और मार्च पास्ट
23 अगस्त, 2024	राष्ट्रीय स्पेस दिवस पर जय विज्ञान जय अनुसंधान विषय पर व्याख्यान
29 अगस्त, 2024	राष्ट्रीय खेल दिवस पर रन फॉर फिटनेस पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन

अगस्त, 2024 प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विभागीय आयोजन

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

29 जुलाई से 02 अगस्त, 2024	पंचम आवधिक परीक्षा (वागभट्ट बैच)
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

01 अगस्त, 2024	सत्र 2024–2025 की कक्षाएं प्रारम्भ
15 अगस्त, 2024	अगस्त स्वतंत्रता दिवस समारोह
24 अगस्त, 2024	अतिथि व्याख्यान

कृषि संकाय

01 अगस्त, 2024	सत्र 2024–25 की कक्षाएं प्रारंभ
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह
28 अगस्त, 2024	शैक्षणिक भ्रमण

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

01 अगस्त, 2024	सत्र 2024–2025 की कक्षाएं प्रारम्भ
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह
24 अगस्त, 2024	ऑर्थोपेडिक डे के उपलक्ष्य में मॉडल प्रस्तुति।

फॉर्मेसी संकाय

01 अगस्त, 2024	सत्र 2024–25 की कक्षाएं प्रारम्भ
05 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह
00 अगस्त, 2024	अतिथि व्याख्यान

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

01 अगस्त, 2024	सत्र 2024–25 की कक्षाएं प्रारम्भ
01 से 07 अगस्त, 2024	विश्व स्तनपान सप्ताह
15 अगस्त, 2024	स्वतंत्रता दिवस समारोह

समाचार दर्पण

गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया संकल्प

महायोगी गोरखनाथ विवि में संकल्प लेते छात्र-छात्राएं। अमृत विचार

गोरखपुर, अमृत विचार। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेशी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (3 July): महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर बुधवार को परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया. विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डा.संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा.

उन्होंने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं. माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्री जल जीवों को प्रभावित कर रहा, बल्कि खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है. व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना की आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है. सहायक आचार्य डा.प्रेरणा अदिति ने कहा कि कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में सहयोग किया जा सकता है.

ये रहे मौजूद

इस दौरान कृषि संकाय के अधिष्ठता डा.विमल कुमार दुबे, डा.आयुष पाठक, डा.विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिह, डा.अमित दूबे, डा.अनुपमा ओझा, डा.आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डा. पवन कुमार कन्नौजिया, डा.अंकिता मिश्रा तथा डा.विकास आदि मौजूद रहे.

विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया संकल्प

- जिला कुश्ती संघ ने सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम में किया सम्मान समारोह का आयोजन
- कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का लेना होगा संकल्प लोग हों जागरूक

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर बुधवार को परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डा.संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

प्लास्टिक मुक्त करने का शपथ लेते छात्र व शिक्षक• जागरण

उन्होंने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्री जल जीवों को प्रभावित कर रहा, बल्कि खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना की आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डा.प्रेरणा अदिति ने कहा कि कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में सहयोग किया जा सकता है।

इस दौरान कृषि संकाय के अधिष्ठता डा.विमल कुमार दुबे, डा.आयुष पाठक, डा.विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डा.अमित दूबे, डा.अनुपमा ओझा, डा.आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डा.पवन कुमार कन्नौजिया, डा.अंकिता मिश्रा तथा डा.विकास आदि मौजूद रहे।

विवि परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प

गोरखनाथ विवि

- अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर व्याख्यान का हुआ आयोजन
- बोले वक्ता-अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं का करे प्रयोग

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है। प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्षों का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल

महायोगी गुरु गोरखनाथ विवि में पॉलीथिन मुक्त अभियान के लिए शपथ लेते छात्र व शिक्षक।

जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी धनन्जय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ.प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव की सक्रिय सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्षों का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ.प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेशी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प

मखौड़ा संदेश गोरखपुर संवाददाता।

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्षों का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थों से हमारे

जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया संकल्प

गोरखपुर (एसएनबी)। अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

सामूहिक रूप से लिया शपथ कि वसुंधरा को रखेंगे स्वच्छ

डा. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ो वर्षो का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थो से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पाण्डेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डा. प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डा. विमल कुमार दुबे, डा. आयुष पाठक, डा. विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डा. अमित दुबे, डा. अनुपमा ओझा, डा. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डा. पवन कुमार कन्नौजिया, डा. अंकिता मिश्रा एवं डा. विकास यादव आदि की सहभागिता रही।

समाचार दर्पण

साइबर सुरक्षा आज वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग है : डॉ.मंजु सिंह

महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी में साइबर जागरूकता वर्कशॉप

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (4 July): महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, (राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार) तत्वाधान में एक साइबर जागरूकता वर्कशॉप में आयोजित की गई. जिसकी अध्यक्षता यूनिवर्सिटी के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई चीफगेस्ट राज्य संपर्क अधिकारी डॉ.मंजु सिंह, विशिष्ठ अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित थे. वेबनार के प्रारंभ में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का वर्कशाप में स्वागत किया एवं इस वर्कशाप के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया. इसके बाद डॉ. मंजु सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीड़िता को किस प्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनाई गई.

टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल

राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं. आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिए वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है. आज महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर के इस वर्कशाप से हम उत्तर प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान की शुरुआत कर रहे हैं. अब पूरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े संस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान वर्कशाप कराई जाएगी.

समाज सेवा का कार्य

कुलपति ने कहा कि हम साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा, यह यूनिवर्सिटी हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा. हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचें. यूनिवर्सिटी के कुल सचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की. अंत में डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन कर वर्कशाप का समापन किया. कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, डॉ.डीएस अजीथा, डॉ.शशिकांत सिंह, डॉ.सुनील कुमार,डॉ.विकास यादव, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ.कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पांडेय, डॉ.संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुंवर अभिनव सिंह राठौर, डॉ.अभिषेक सिंह, सच्चिदानन्द पाण्डेय, सुमन सिंह, कविता साहनी, कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल आदि मौजूद रहे.

100 साइबर जागरूकता अभियान वर्कशाप कराई जाएगी.

यूनिवर्सिटी हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा. हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचें.

साइबर सुरक्षा आज वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग है : डॉ.मंजु

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ ,उच्च शिक्षा विभाग ,उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ ,राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार तत्वाधान में एक साइबर जागरूकता कार्यशाला ऑनलाइन माध्यम में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेषकार्याधिकारी एवं राज्य सपर्क अधिकारी राष्टीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डॉ.मंजु सिंह विशिष्ठ अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार उपस्थति थे।

डॉ. मंजु सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीडिता की किसप्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते है आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिय वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के इस कार्यशाला से हम उत्तर प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान की शुरआत कर रहे है अब पुरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े सस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान कार्यशाला करायी जायेगी ।अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे कुलपति ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा यह विश्वविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा।

साइबर सुरक्षा वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग : डा.मंजू

गोरखपुर।

सहारा न्यूज ब्यूरो

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ ,उच्च शिक्षा विभाग ,उत्तर प्रदेश शासन के तत्वावधान में आनलाइन साइबर जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेषकार्याधिकारी एवं राज्य संपर्क अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डा. मंजु सिंह, विशिष्ठ अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय मौजूद रहे।

वेबनार के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डा. अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का कार्यशाला में स्वागत किया एवं इस कार्यशाला के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया। इसके बाद डा. मंजु सिंह ने साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीड़िता की किस प्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं के बारे में बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा यह विवविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा। कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, संकायध्यक्ष डा. डीएस अजीथा,डा. शशिकांत सिंह, डा. सुनील कुमार,डा. विकास यादव, डा. कुलदीप सिंह, डा. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठोर, डा. अभिषेक सिंह , सच्चिनन्दन पाण्डेय , सुमन सिंह , कविता साहनी, ,कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार एवं अनिल आदि मौजूद रहे।

गोरखनाथ विवि में साइबर जागरूकता कार्यशाला का आनलाइन आयोजन

साइबर क्राइम से बचाव के तरीकों की दी जानकारी

गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ की ओर से गुरुवार को साइबर जागरूकता कार्यशाला (ऑनलाइन माध्यम) का आयोजन किया गया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई ने की। मुख्य अतिथि राज्य संपर्क अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. मंजू सिंह एवं विशिष्ट अतिथि युवा अधिकारी, खेल मंत्रालय समरदीप सक्सेना थे। डॉ. मंजू सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने की जानकारी दी।

कुलपति ने कहा साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा के कार्यों में विश्वविद्यालय हमेशा आगे रहेगा। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

साइबर सुरक्षा आज वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग है : डॉ.मंजु सिंह

संवाददाता

गोरखपुर । महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ ,उच्च शिक्षा विभाग ,उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ , (राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवम खेल मत्रालय,भारत सरकार) तत्वाधान में एक साइबर जागरूकता कार्यशाला (ऑनलाइन माध्यम) में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेषकार्यधिकारी एवं राज्य संपर्क अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डॉ.मंजु सिंह विशिष्ठ अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार उपस्थति थे द्य वेबनार के प्रारम्भ में राष्टीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का कार्यशाला मे स्वागत किया एवं इस कार्यशाला के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया उसके उपरांत डॉ. मंजु सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीडिता की किसप्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिय वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के इस कार्यशाला से हम उत्तर प्रदेश मे साइबर जागरूकता अभियान की शुरआत कर रहे है अब पुरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुडे संस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान कार्यशाला करायी जायेगी द्यअपने अध्यक्षीय उदबोधन मे कुलपति जी ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा यह विश्वविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा द्य हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचेंद्य विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव मे इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की द्यअंत में डॉ. अखिलेश कुमार दुबे मे सभी का धन्यबाद ज्ञापन कर कार्यशाला का समापन किया द्यकार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्री श्रीकांत, संकायध्यक्षडॉ.डी एस अजीथा,डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ.सुनील कुमार,डॉ.विकाश यादव, डॉ. कुलदीप सिंह डॉ.कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ.संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठोर, डॉ.अभिषेक सिंह , सच्चिनन्दन पाण्डेय , सुमन सिंह , कविता साहनी, ,कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल इत्यादि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहे ।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

- एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई इसी सत्र से
- 1800 बेड के हाइटेक अस्पताल वाला होगा महायोगी गोरखनाथ विवि का मेडिकल कॉलेज

स्टेट वाहक न्यूज

गोरखपुर। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है।

इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं। महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

गोरखपुर, बस्ती, बिहार और नेपाल के लाखों लोगों को होगा लाभ

गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को 1800 बेड का अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला एक नया अस्पताल भी मिल जाएगा। कुलपति डॉ. वाजपेयी ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज होगा। साथ ही एम्स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के बाद शहर का यह तीसरा बड़ा चिकित्सा संस्थान होगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

डॉ संजय माहेश्वरी की अध्यक्षता में गठित है अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी

कुलसचिव डॉ राव ने बताया कि मेडिकल कॉलेज की स्थापना और रोल मॉडल के रूप में इसके विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डॉ संजय माहेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है। इसमें एम्स नई दिल्ली के डॉ संजीव सिनहा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ जीएन सिंह, यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के डॉ राघवेंद्र राव, डॉ असित मैती पिट्सबर्ग और डॉ केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं। यह कमेटी मुख्य रूप से देश के भीतर और बाहर स्थित समस्त संस्थाओं के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित करने के लिए काम करेगी।

तत्कालीन राष्ट्रपति ने किया था विश्वविद्यालय का उद्घाटन

उल्लेखनीय है कि महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था। अब मेडिकल कॉलेज के जरिये 1800 बेड के अत्याधुनिक अस्पताल का सपना भी साकार हो रहा है। पहले सत्र में 50 सीटों के साथ शुरू हो रहे मेडिकल कॉलेज के पास 450 बेड का गोरखनाथ चिकित्सालय पहले से है। जल्द ही इसमें 1800 बेड का नया अस्पताल भी जुड़ जाएगा।

समाचार दर्पण

महायोगी गोरखनाथ विवि : मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

गोरखपुर (एसएनबी)। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कालेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये

- चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम जुड़ी एक और उपलब्धि
- एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई इसी सत्र से, 50 सीटे हैं मिली
- 1800 बेड के हाइटेक अस्पताल वाला होगा महायोगी गोरखनाथ विवि का मेडिकल कालेज

एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। बता दें कि यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं।

महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टीच्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत वर्ष 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच शनिवार को नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है।

एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे

पूर्वांचल के लिए बड़ी सौगात है। **डा. माहेश्वरी की अध्यक्षता में गठित है अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कमेटी :** कुलसचिव डा. राव ने बताया कि मेडिकल कालेज की स्थापना और रोल माडल के रूप में इसके विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डा. संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है। इसमें एम्स नई दिल्ली के डा. संजीव सिन्हा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह, यूनाइटेड स्टेट आफ अमेरिका के डा. राघवेंद्र राव, डा. असिथ मैली पिट्सबर्ग और डा. केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं।

चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम जुड़ी एक और उपलब्धि, दाखिला और पढ़ाई इसी सत्र से

गोरखनाथ विवि को एमबीबीएस कोर्स की मान्यता

हि अच्छी खबर

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है। पूर्वी यूपी में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल काउंसिल (एनएमसी) से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं।

महज तीन वर्षों में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम

18 सौ बेड के हाइटेक अस्पताल वाला होगा मेडिकल कॉलेज

50 एमबीबीएस सीटों को पहले सत्र के लिए मिली मान्यता

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय (फाइल फोटो)।

रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। अब एनएमसी ने श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। इसपर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

तीन चरणों में बनेगा मेडिकल कालेज : कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के अनुसार, पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। इस संख्या को दूसरे और तीसरे चरण में और बढ़ाया जाएगा।

एमबीबीएस की मान्यता मिल जाने से पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी। इससे गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को 1800 बेड का अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला एक नया अस्पताल भी मिल जाएगा। कुलपति डॉ. वाजपेयी ने

डॉ. संजय माहेश्वरी की अध्यक्षता में गठित है कमेटी

कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि मेडिकल कॉलेज की स्थापना और रोल मॉडल के रूप में इसके विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डॉ संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है। इसमें एम्स नई दिल्ली के डॉ संजीव सिन्हा, पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ जीएन सिंह, युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के डॉ राघवेंद्र राव, डॉ असिथ मैली पिट्सबर्ग और डॉ केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं। यह कमेटी मुख्य रूप से देश के भीतर और बाहर स्थित समक्ष संस्थाओं के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित करने के लिए काम करेगी। इस समिति में कुलसचिव सदस्य सचिव के रूप में रहेंगे। इसके साथ ही बनाई गई प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग यूनिट में कुलपति अध्यक्ष हैं। उनके अलावा कर्नल (डॉ) राजेंद्र चतुर्वेदी संयोजक, डॉ. आर चंद्रशेखर प्रिंसिपल आर्किटेक्ट, जीएन सिंह, डॉ संजय माहेश्वरी, ब्रिगेडियर दीप ठाकुर, आर्किटेक्ट आशीष श्रीवास्तव, आरडी पटेल, वरुण भार्गव, राजेश सिंह, एसके सिंह, एके श्रीवास्तव शामिल हैं।

बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज होगा। साथ ही एम्स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर के बाद शहर का तीसरा बड़ा चिकित्सा संस्थान होगा। विवि की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

तत्कालीन राष्ट्रपति ने किया था विश्वविद्यालय का उद्घाटन : महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन बीते 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था। अब मेडिकल कॉलेज के जरिये 1800 बेड के अत्याधुनिक अस्पताल का सपना भी साकार हो रहा है। पहले सत्र में 50 सीटों के साथ शुरू हो रहे मेडिकल कॉलेज के पास 450 बेड का गोरखनाथ चिकित्सालय पहले से है। जल्द ही इसमें 1800 बेड का नया अस्पताल भी जुड़ जाएगा।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम जुड़ी एक और उपलब्धि

- एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई इसी सत्र से
- 1800 बेड के हाइटेक अस्पताल वाला होगा महायोगी गोरखनाथ विवि का मेडिकल कॉलेज

सत्य संगम संवाददाता

गोरखपुर। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की

तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं। महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल कार्उंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है। कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। इस संख्या को दूसरे और तीसरे चरण में और बढ़ाया जाएगा।

गोरखपुर, बस्ती, बिहार और नेपाल के लाखों लोगों को होगा लाभ

गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को 1800 बेड का अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला एक नया अस्पताल भी मिल जाएगा। कुलपति डॉ. वाजपेयी ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज होगा। साथ ही एम्स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के बाद शहर का यह तीसरा बड़ा चिकित्सा संस्थान होगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

---

50 सीटो पर इसी वर्ष से नीट काउंसिलिंग के जरिये शुरू किया जाएगा प्रवेश

गोरखनाथ यूनिवर्सिटी को MBBS की मान्यता

GOOD NEWS

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (6 July): चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम शनिवार को एक और उपलब्धि जुड़ गई. गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कालेज को नेशनल मेडिकल काउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम के संचालन की मान्यता प्राप्त हो गई है. विश्वविद्यालय को 50 सीटों पर प्रवेश के लिए मान्यता मिली है. इसी सत्र से पाठ्यक्रम का संचालन शुरू करने की योजना विश्वविद्यालय प्रबंधन ने बना ली है. नीट काउंसिलिंग के जरिये एमबीबीएस में प्रवेश लिया जाएगा.

बढ़ेगी सीटों की संख्या

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं. उन्होंने बताया कि नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी जैसे रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही विश्वविद्यालय में 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है. एमबीबीएस के संचालन की मान्यता मिलने के साथ ही उपलब्धियों की श्रृंखला में एक और महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ गई है. उन्होंने यह बताया कि एमबीबीएस की सीटों की संख्या में चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जाएगा.

1800 बेड का हॉस्पिटल

विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कालेज तीन चरणों में तैयार होगा. पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा. कुलपति ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कालेज होगा. गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने खुशी जताई है.

अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी

कुलसचिव डॉ. राव ने बताया कि मेडिकल कालेज की स्थापना में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं. अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप आफ हॉस्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है. इसमें एम्स नई दिल्ली के डॉ. संजीव सिन्हा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, यूनाइटेड स्टेट आफ अमेरिका के डॉ. राघवेंद्र राव, डॉ. असिथ मैली पिट्सबर्ग और डॉ. केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं. यह कमेटी मुख्य रूप से देश के भीतर और बाहर स्थित समक्ष संस्थाओं के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित करने के लिए काम करेगी. इस समिति में कुलसचिव सदस्य सचिव के रूप में रहेंगे.

राष्ट्रपति ने किया था उद्घाटन

महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था. अब मेडिकल कालेज के जरिये 1800 बेड के अत्याधुनिक अस्पताल का सपना भी साकार हो रहा है. पहले सत्र में 50 सीटों के साथ शुरू हो रहे मेडिकल कालेज के पास 450 बेड का गोरखनाथ चिकित्सालय पहले से है. जल्द ही इसमें 1800 बेड का नया अस्पताल भी जुड़ जाएगा. जिसके आधार पर आगामी सत्रों में मेडिकल कालेज में एमबीबीएस की सीटों का विस्तार होगा.

गोरखनाथ विवि में एमबीबीएस की मान्यता

चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम जुड़ी एक और उपलब्धि

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम शनिवार को एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कालेज को नेशनल मेडिकल काउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम के संचालन की मान्यता प्राप्त हो गई है। विश्वविद्यालय को 50 सीटों पर प्रवेश के लिए मान्यता मिली है। इसी सत्र से पाठ्यक्रम का संचालन शुरू करने की योजना विश्वविद्यालय प्रबंधन ने बना ली है। नीट काउंसिलिंग के जरिये एमबीबीएस में प्रवेश लिया जाएगा। मान्यता मिलने के बाद प्रवेश की तैयारी में विश्वविद्यालय जुट गया है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। उन्होंने बताया कि नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी जैसे रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही विश्वविद्यालय में 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस के संचालन की

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय • जागरण

मान्यता मिलने के साथ ही उपलब्धियों की श्रृंखला में एक और महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ गई है। उन्होंने यह बताया कि एमबीबीएस की सीटों की संख्या में चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कालेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। कुलपति ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कालेज होगा। साथ ही एम्स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के बाद शहर का यह तीसरा बड़ा चिकित्सा संस्थान होगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों और भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह आदि ने खुशी जाहिर की।

डा. संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में गठित है अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी: कुलसचिव डा. राव ने बताया कि मेडिकल कालेज की स्थापना में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डा. संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है। इसमें एम्स नई दिल्ली के डा. संजीव सिन्हा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह, यूनाइटेड स्टेट आफ अमेरिका के डा. राघवेंद्र राव, डा. असिथ मैली पिट्सबर्ग और डा. केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं। यह कमेटी मुख्य रूप से देश के भीतर और बाहर स्थित समक्ष संस्थाओं के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित करने के लिए काम करेगी। इस समिति में कुलसचिव सदस्य सचिव के रूप में रहेंगे।

राष्ट्रपति ने किया था विश्वविद्यालय का उद्घाटन

महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया था। अब मेडिकल कालेज के जरिये 1800 बेड के अत्याधुनिक अस्पताल का सपना भी साकार हो रहा है। पहले सत्र में 50 सीटों के साथ शुरू हो रहे मेडिकल कॉलेज के पास 450 बेड का गोरखनाथ चिकित्सालय पहले से है। जल्द ही इसमें 1800 बेड का नया अस्पताल भी जुड़ जाएगा, जिसके आधार पर आगामी सत्रों में मेडिकल कालेज में एमबीबीएस की सीटों का विस्तार होगा।

समाचार दर्पण

महायोगी गोरखनाथ विवि को एमबीबीएस की मान्यता

50 सीटों पर इसी सत्र में शुरू हो जाएगा नामांकन

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। जिले के निजी क्षेत्र के पहले महायोगी गोरखनाथ विवि के श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को नेशनल मेडिकल काउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता मिल गई है।

अब यहां इसी सत्र से नीट काउंसिलिंग के जरिए 50 सीटों पर एमबीबीएस कोर्स में नामांकन और पढ़ाई शुरू हो जाएगी। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति गोरक्षपीठाधीश्वर एवं सीएम योगी आदित्यनाथ हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले,

1800 बेड के हाइटेक अस्पताल वाला होगा महायोगी विवि का मेडिकल कॉलेज

दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा।

कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। इस मेडिकल कॉलेज के साथ बनने वाले 1800 बेड के अत्याधुनिक सुपर स्पेशियालिटी सुविधा वाले अस्पताल का लाभ पूर्वांचल को मिलेगा।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

निष्पक्ष प्रतिदिन | गोरखपुर

चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं। महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के

तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है। कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा।

खुशखबरी : महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

भास्कर ब्यूरो

- चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम जुड़ी एक और उपलब्धि
- एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई इसी सत्र से

गोरखपुर। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं।

महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम अहम उपलब्धि

स्वरूप ब्यूरो

गोरखपुर । चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं। महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

गठित है अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी

कुल सचिव डॉ राव ने बताया कि मेडिकल कॉलेज की स्थापना और रोल मॉडल के रूप में इसके विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की दो कमेटियां सहयोग दे रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर की कमेटी प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के मेडिकल डायरेक्टर डॉ संजय महेश्वरी की अध्यक्षता में बनाई गई है। इसमें एम्स नई दिल्ली के डॉ संजीव सिन्हा, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ जीएन सिंह, यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के डॉ राघवेंद्र राव, डॉ अमित गैली फिट्सबर्ग और डॉ केशव दास सदस्य के रूप में शामिल हैं।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं।महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश?वविद्यालय में स?थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश?वर एवं प्रदेश के मुख?यमंत्री योगी आदित?यनाथ का ड्रीम प्रोजेक?ट भी है। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। इस संख्या को दूसरे और तीसरे चरण में और बढ़ाया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता मिल जाने से न? सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास।

गोरखपुर, बस्ती, बिहार और नेपाल के लाखों लोगों को होगा लाभ

गुणवत्तापरक चिकित?सा शिक्षा उपलब?ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस?ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को 1800 बेड का अत?याधुनिक सुपरस?पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला एक नया अस?पताल भी मिल जाएगा। कुलपति डॉ. वाजपेयी ने बताया कि यह वाराणसी और लखनऊ के बाद गोरखपुर में निजी क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज होगा। साथ ही एम?स गोरखपुर और बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के बाद शहर का यह तीसरा बड़ा चिकित?सा संस?थान होगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

महायोगी गोरखनाथ विवि को मिली एमबीबीएस पाठ्यक्रम की मान्यता

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। चिकित्सा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर के नाम आज एक और उपलब्धि जुड़ गई। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कॉउंसिल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त हो गई है। इसी सत्र से यहां नीट काउंसलिंग के जरिये एमबीबीएस कोर्स में दाखिला और पढ़ाई प्रारंभ हो जाएगी। यह विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित है और मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसके कुलाधिपति हैं। महज तीन साल की अपनी प्रगति यात्रा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कई स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। इस बीच आज नेशनल मेडिकल काउंसिल ने विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को एमबीबीएस की मान्यता भी प्रदान कर दी है। पहले सत्र के लिए यहां 50 एमबीबीएस सीटों के लिए मान्यता मिली है। एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

कुलपति एवं कुलसचिव ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का मेडिकल कॉलेज तीन चरणों में बनकर तैयार होगा। पहले, दूसरे और तीसरे चरण में 600-600 यानी कुल 1800 बेड का अस्पताल बनेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है।

समाचार दर्पण

चार वर्षीय स्नातक में 75 फीसद अंक पर पीएचडी में सीधे प्रवेश

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधानों को लागू करने में रोल मॉडल के रूप में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कई प्रावधानों को प्रमुखता से लागू कर चुके इस विश्वविद्यालय में अब चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में 75 फीसद अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पीएचडी में सीधे प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

इसे लेकर सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में मुहर लग गई। कुल 85 बिंदुओं पर हुई कार्यपरिषद की बैठक में इस सत्र से ही विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस कोर्स के संचालन, 600 बेड के हॉस्पिटल निर्माण और पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लॉजिस्टिक कोर्स के संचालन को भी कार्यपरिषद की तरफ से हरी झंडी मिल गई। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के संचालन में हुई कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने सभी 85 बिंदुओं पर अनुमोदन प्रदान किया। कार्यपरिषद ने इस शिक्षा नीति के अनुसार चार वर्षीय डिग्री कोर्स में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त अभ्यर्थी को पीएचडी में सीधे प्रवेश की मंजूरी दे दी है। बैठक के दौरान एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर हर्ष जताया गया और कार्यपरिषद की तरफ से इसी सत्र से इस कोर्स के संचालन और इसके लिए विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में 600 बेड के अस्पताल के निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गई।

कार्य परिषद की बैठक में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की आचार्य डॉ. शोभा गौड़, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य रामजन्म सिंह, प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा प्रेम कुमार पांडेय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार सिंह, आयुर्वेद कॉलेज के सह आचार्य डॉ. सुमित कुमार एम., सहायक आचार्य डॉ. प्रिया एसआर नैयर, चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डॉ. हरिओम शरण, सीए अनिल कुमार सिंह, मुख्य अभियंता नीरज कुमार गौतम, सहायक अभियंता आशीष सिंह आदि उपस्थित रहे।

चार वर्षीय स्नातक में 75 फीसद अंक पर पीएचडी में सीधे प्रवेश

☐ महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की बैठक में लिया गया निर्णय

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधानों को लागू करने में रोल मॉडल के रूप में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कई प्रावधानों को प्रमुखता से लागू कर चुके इस विश्वविद्यालय में अब चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में 75 फीसद अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पीएचडी में सीधे प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। इसे लेकर सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में मुहर लग गई। कुल 85 बिंदुओं पर हुई कार्यपरिषद की बैठक में इस सत्र से ही विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस कोर्स के संचालन, 600 बेड के हॉस्पिटल निर्माण और पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लॉजिस्टिक कोर्स के संचालन को भी कार्यपरिषद की तरफ से हरी झंडी मिल गई। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के संचालन में हुई कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने सभी 85 बिंदुओं पर अनुमोदन प्रदान किया। कार्यपरिषद ने इस विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरुप प्रतिमान बनाने का संकल्प लिया है। कार्यपरिषद ने इस शिक्षा नीति के अनुसार चार वर्षीय डिग्री कोर्स में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त अभ्यर्थी को पीएचडी में सीधे प्रवेश की मंजूरी दे दी है। बैठक के दौरान एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर हर्ष जताया गया। कार्य परिषद की बैठक में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की आचार्य डॉ. शोभा गौड़, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य रामजन्म सिंह, प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा प्रेम कुमार पांडेय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार सिंह, आयुर्वेद कॉलेज के सह आचार्य डॉ. सुमित कुमार एम., सहायक आचार्य डॉ. प्रिया एसआर नैयर, चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डॉ. हरिओम शरण, सीए अनिल कुमार सिंह, मुख्य अभियंता नीरज कुमार गौतम, सहायक अभियंता आशीष सिंह आदि उपस्थित रहे।

75 फीसद अंक पर पीएचडी में सीधे प्रवेश

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की बैठक में लिया गया निर्णय

- एमबीबीएस समेत कई महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों के संचालन पर कार्यपरिषद की लगी मुहर
- एक वर्षीय और दो वर्षीय एमएससी के पाठ्यक्रम के संचालन को भी मिली मंजूरी

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में 75 फीसद अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पीएचडी में सीधे प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। इसे लेकर सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में मुहर लग गई। कुल 85 बिंदुओं पर हुई कार्यपरिषद की बैठक में इस सत्र से ही विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज में एमबीबीएस कोर्स के संचालन, 600 बेड के हास्पिटल निर्माण और पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लाजिस्टिक कोर्स के संचालन को भी कार्यपरिषद की ओर से स्वीकृति मिल गई।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय मे कार्यपरिषद की बैठक मे विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करते कुलपति मेजर जनरल अतुल वाजपेयी, कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव व अन्य●

कुलपति मेजर जनरल डा.अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डा.प्रदीप कुमार राव के संचालन में हुई कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने सभी 85 बिंदुओं पर अनुमोदन प्रदान किया। कार्यपरिषद ने इस विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप प्रतिमान बनाने का संकल्प लिया है। कार्यपरिषद ने इस शिक्षा नीति के अनुसार चार वर्षीय डिग्री कोर्स में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त अभ्यर्थी को पीएचडी में सीधे प्रवेश की मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत एक वर्षीय और दो वर्षीय एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री तथा माइक्रोबायोलाजी में प्रवेश पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी। बैठक के दौरान एमबीबीएस की मान्यता मिलने पर हर्ष जताया गया और कार्यपरिषद की तरफ से इसी सत्र से इस कोर्स के संचालन और इसके लिए विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज में 600 बेड के अस्पताल के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई।

विश्वविद्यालय के गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज आफ नर्सिंग में फ्रेंच और स्पेनिश भाषा के अध्ययन और विश्वविद्यालय में पेड अप्रेंटिसशिप के साथ बीबीए लाजिस्टिक पाठ्यक्रम के प्रस्ताव को भी कार्यपरिषद ने मंजूर कर लिया। बैठक में कार्य परिषद सदस्य प्रो.शोभा गौड़, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, महाराणा प्रताप इंटर कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य रामजन्म सिंह, शासन के उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा प्रेम कुमार पांडेय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डा.सुनील कुमार सिंह, परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार सिंह, आयुर्वेद कालेज के डा.सुमित कुमार एम., डा.प्रिया एसआर नैयर, चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डा.हरिओम शरण, अनिल कुमार सिंह, नीरज कुमार गौतम, आशीष सिंह आदि मौजूद रहे।

समाचार दर्पण

संतुलित आहार से रोका जा सकता है सोरायसिस के लक्षणों को

- गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस छात्रा ने किया सोरायसिस प्रबंधन पर शोध
- प्रोसेस्ड फूड, कोल्ड ड्रिंक, शराब, तंबाकू के सेवन से बचना चाहिए सोरायसिस रोगी को

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। सोरायसिस त्वचा से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जिसमें त्वचा के ऊपर एक मोटी परत बन जाती है। इसमें तेज खुजली होती है और कई बार ये घाव भी बना देती है। इस बीमारी के प्रति सतर्कता और जागरूकता बेहद जरूरी है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस,सुश्रुत बैच की छात्रा सिमरन तिवारी ने सोरायसिस पर किए गए शोध में यह पता लगाया है कि संतुलित आहार के सेवन से सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। ओमेगा-3 वसीय अम्लो से युक्त खाद्य पदार्थ (वसाई मछली, अखरोट और अलसी आदि) सोरायसिस पैच की सूजन को कम करने मे कारगर हैं।

सिमरन तिवारी ने अपना शोध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की डॉ. प्रिया एसआर नायर (क्रिया शारीर विभाग) और डॉ. प्रज्ञा सिंह (संहिता एवं सिद्धांत विभाग) के पर्यवेक्षण में किया है। सिमरन बताती हैं कि सोरायसिस एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अति सक्रिय हो जाती है। इस रोग में त्वचा पर कोशिकाएं तेजी से जमा होने लगती हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं के कम होने के कारण त्वचा की परत सामान्य से अधिक तेजी से बनने लगती है, साथ ही त्वचा पर पपड़ीदार और सूजन वाले घाव हो जाते हैं। यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है पर ज्यदातर खोपड़ी, कोहनी या घुटने आदि को प्रभावित करता है। डॉक्टर और वैज्ञानिक अब तक सोरायसिस के असल कारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। सोरायसिस का उपचार बीमारी के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस छात्रा ने किया सोरायसिस प्रबंधन पर शोध

गोरखपुर। सोरायसिस त्वचा से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जिसमें त्वचा के ऊपर एक मोटी परत बन जाती है। इसमें तेज खुजली होती है और कई बार ये घाव भी बना देती है। इस बीमारी के प्रति सतर्कता और जागरूकता बेहद जरूरी है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस,सुश्रुत बैच की छात्रा सिमरन तिवारी ने सोरायसिस पर किए गए शोध में यह पता लगाया है कि संतुलित आहार के सेवन से सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। ओमेगा-3 वसीय अम्लो से युक्त खाद्य पदार्थ (वसाई मछली, अखरोट और अलसी आदि) सोरायसिस पैच की सूजन को कम करने मे कारगर हैं। सिमरन तिवारी ने अपना शोध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की डॉ. प्रिया एसआर नायर (क्रिया शारीर विभाग) और डॉ. प्रज्ञा सिंह (संहिता एवं सिद्धांत विभाग) के पर्यवेक्षण में किया है। सिमरन बताती हैं कि सोरायसिस एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसमें रोगी के शरीर की

प्रतिरक्षा प्रणाली अति सक्रिय हो जाती है। इस रोग में त्वचा पर कोशिकाएं तेजी से जमा होने लगती हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं के कम होने के कारण त्वचा की परत सामान्य से अधिक तेजी से बनने लगती है, साथ ही त्वचा पर पपड़ीदार और सूजन वाले घाव हो जाते हैं। यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है पर ज्यदातर खोपड़ी, कोहनी या घुटने आदि को प्रभावित करता है। डॉक्टर और वैज्ञानिक अब तक सोरायसिस के असल कारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। सोरायसिस का उपचार बीमारी के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है। सिमरन के शोध निष्कर्ष में कहा गया है कि बीमारी की रोकथाम में आहार और स्वच्छता का ध्यान बहुत जरूरी है। इसमें प्रोसेस्ड फूड, कोल्ड ड्रिंक, सैचुरेटिड एवं ट्रांसफैट युक्त भोजन का सेवन करने से बचना चाहिए। शराब सेवन, धूम्रपान और तंबाकू जैसे उत्पादों का सेवन करने से लक्षणों को गंभीर बना सकते है। इस रोग में विशेष रूप से त्वचा की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। सौम्य, सुगंधहीन, रसायन मुक्त उत्पादों का प्रयोग करके सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। कठोर साबुन और सर्फ का प्रयोग न करें क्योंकि ये लक्षणों को उग्र कर सकते हैं। त्वचा में नमी बनाए रखने के लिए एवं रूखी त्वचा से बचाने के लिए केमिकल फ्री मॉइश्चराइजर एवं लेप का उपयोग करें। इसके साथ ही पर्याप्त नींद लेना और तनाव से बचना भी आवश्यक है। यदि आप सोरायसिस जैसे लक्षण अनुभव करते हैं तो तुरंत डॉक्टर से मिलें, क्योंकि सोरायसिस का घरेलू इलाज करने के साथ-साथ चिकित्सक की सलाह भी बहुत जरूरी होती है।

संतुलित आहार से रोका जा सकता सोरायसिस के लक्षण

इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस छात्रा ने किया सोरायसिस प्रबंधन पर शोध

गोरखपुर, 15 जुलाई (तरुणमित्र)। सोरायसिस त्वचा से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जिसमें त्वचा के ऊपर एक मोटी परत बन जाती है। इसमें तेज खुजली होती है और कई बार ये घाव भी बना देती है। इस बीमारी के प्रति सतर्कता और जागरूकता बेहद जरूरी है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस,सुश्रुत बैच की छात्रा सिमरन तिवारी ने सोरायसिस पर किए गए शोध में यह पता लगाया है कि संतुलित आहार के सेवन से सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है।

ओमेगा-3 वसीय अम्लो से

युक्त खाद्य पदार्थ (वसाई मछली, अखरोट और अलसी आदि) सोरायसिस पैच की सूजन को कम करने मे कारगर हैं। सिमरन तिवारी ने अपना शोध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की डॉ. प्रिया एसआर नायर (क्रिया शारीर विभाग) और डॉ. प्रज्ञा सिंह (संहिता एवं सिद्धांत विभाग) के पर्यवेक्षण में किया है। सिमरन बताती हैं कि सोरायसिस एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अति सक्रिय हो जाती है।

इस रोग में त्वचा पर कोशिकाएं तेजी से जमा होने लगती हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं के कम होने के कारण त्वचा की परत सामान्य से अधिक तेजी से बनने लगती है,साथ ही त्वचा पर पपड़ीदार और सूजन वाले घाव हो जाते हैं। यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है पर ज्यदातर खोपड़ी, कोहनी या घुटने आदि को प्रभावित करता है।

डॉक्टर और वैज्ञानिक अब तक सोरायसिस के असल कारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। सोरायसिस का उपचार बीमारी के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है। सिमरन के शोध निष्कर्ष में कहा गया है।

कि बीमारी की रोकथाम में आहार और स्वच्छता का ध्यान बहुत जरूरी है। इसमें प्रोसेस्ड फूड, कोल्ड ड्रिंक, सैचुरेटिड एवं ट्रांसफैट युक्त भोजन का सेवन करने से बचना चाहिए। शराब सेवन, धूम्रपान और तंबाकू जैसे उत्पादों का सेवन करने से लक्षणों को गंभीर बना सकते है।

इस रोग में विशेष रूप से त्वचा की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। सौम्य, सुगंधहीन, रसायन मुक्त उत्पादों का प्रयोग करके सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। कठोर साबुन और सर्फ का प्रयोग न करें क्योंकि ये लक्षणों को उग्र कर सकते हैं।

त्वचा में नमी बनाए रखने के लिए एवं रूखी त्वचा से बचाने के लिए केमिकल फ्री मॉइश्चराइजर एवं लेप का उपयोग करें। इसके साथ ही पर्याप्त नींद लेना और तनाव से बचना भी आवश्यक है।

यदि आप सोरायसिस जैसे लक्षण अनुभव करते हैं तो तुरंत डॉक्टर से मिलें, क्योंकि सोरायसिस का घरेलू इलाज करने के साथ-साथ चिकित्सक की सलाह भी बहुत जरूरी होती है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विवि की विशिष्ट पहचान : डॉ. जीएन सिंह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ से शुरू हुई नए विद्यार्थियों की संस्कारशाला

गोरखपुर। भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अनुशासन, नवाचार, परिसर संस्कृति और मानव सेवा के भाव से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। अपने अभिनव शिक्षण पद्धति से बहुत ही कम समय में यह विश्वविद्यालय रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। डॉ. सिंह मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। नवागत विद्यार्थियों का परिसर में स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके अंतर्गत संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने चार वर्षों की यात्रा में कई प्रतिमान स्थापित किए हैं। उन्होंने कहा कि बड़े लक्ष्य के लिए अनुशासन, कार्य निष्ठा, स्वयं के कार्य के प्रति ईमानदारी, सात्विक भाव अर्पण होना चाहिए। दीक्षारंभ संस्कार की पहली पाठशाला है जहा पहली बार विश्वविद्यालय के आंगन में ज्ञान अर्जन के लिए गुरु शिष्य का परिचय साक्षात्कार होता है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने 1932 में शिक्षा के जिस बीज का अंकुरण किया था आज वह विशाल वट के रूप में स्थापित हो चुका है। दीक्षारंभ समारोह में मुख्य अतिथि,कुलपति, कुलसचिव आदि ने मां सरस्वती, गुरु गोरखनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। धन्यवाद ज्ञापन नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य डॉ. डीएस अजीथा ने किया। दीक्षारंभ समारोह में प्रमुख रूप से फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, अधिष्ठता प्रो. सुनील कुमार सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अमित दुबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास यादव, धनंजय पांडेय, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. संदीप श्रीवास्तव, श्वेता अल्बर्ट सहित सभी विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विवि की विशिष्ट पहचान : डॉ. जीएन सिंह

- महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ से शुरू हुई नए विद्यार्थियों की संस्कारशाला
- दीक्षारंभ समारोह से नए विद्यार्थियों को मिलता है एक-दूसरे को जानने का अवसर : डॉ. वाजपेयी
- चार वर्षों की यात्रा में विश्वविद्यालय ने स्थापित किए कई प्रतिमान : डॉ. राव

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अनुशासन, नवाचार, परिसर संस्कृति और मानव सेवा के भाव से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। अपने अभिनव शिक्षण पद्धति से बहुत ही कम समय में यह विश्वविद्यालय रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है।

डॉ. सिंह मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि यहां प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी बहुत ही सौभाग्यशाली हैं। यहां विद्यार्थियों को संस्कार और अद्यानुतन तकनीक के साथ शिक्षित होकर सशक्त नागरिक बनने का अवसर प्राप्त होगा।

नवागत विद्यार्थियों का परिसर में स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके अंतर्गत संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने चार वर्षों की यात्रा में कई प्रतिमान स्थापित किए हैं।

यहां के शिक्षकों के कुशल नेतृत्व में निरंतर नवाचारों से कई विषयों में अन्वेषण जारी है। डॉ. राव ने कहा कि अनुशासन की ताप में तपे यहां के विद्यार्थी अन्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहे हैं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने 1932 में शिक्षा के जिस बीज का अंकुरण किया था आज वह विशाल वट के रूप में स्थापित हो चुका है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ से नए विद्यार्थियों को एक-दूसरे को जानने का अवसर मिलता है। नए विद्यार्थी कोमल माटी के समान होते हैं, उन्हें जिस आकार में ढाला जायेगा वो उसी में ढल जायेंगे।

डॉ. डीएस अजीथा, डॉ शशिकांत सिंह, अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अमित दुबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास यादव, धनंजय पांडेय, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्वेता अल्बर्ट सहित सभी विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विवि की विशिष्ट पहचान : डॉ. जीएन सिंह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ से शुरू हुई नए विद्यार्थियों की संस्कारशाला

गोरखपुर। भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अनुशासन, नवाचार, परिसर संस्कृति और मानव सेवा के भाव से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। अपने अभिनव शिक्षण पद्धति से बहुत ही कम समय में यह विश्वविद्यालय रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। डॉ. सिंह मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। नवागत विद्यार्थियों का परिसर में स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके अंतर्गत संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने चार वर्षों की यात्रा में कई प्रतिमान स्थापित किए हैं। उन्होंने कहा कि बड़े लक्ष्य के लिए अनुशासन, कार्य निष्ठा, स्वयं के कार्य के प्रति ईमानदारी, सात्विक भाव अर्पण होना चाहिए। दीक्षारंभ संस्कार की पहली पाठशाला है जहा पहली बार विश्वविद्यालय के आंगन में ज्ञान अर्जन के लिए गुरु शिष्य का परिचय साक्षात्कार होता है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने 1932 में शिक्षा के जिस बीज का अंकुरण किया था आज वह विशाल वट के रूप में स्थापित हो चुका है। दीक्षारंभ समारोह में मुख्य अतिथि,कुलपति, कुलसचिव आदि ने मां सरस्वती, गुरु गोरखनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। धन्यवाद ज्ञापन नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य डॉ. डीएस अजीथा ने किया। दीक्षारंभ समारोह में प्रमुख रूप से फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, अधिष्ठता प्रो. सुनील कुमार सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास यादव, धनंजय पांडेय, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. संदीप श्रीवास्तव, श्वेता अल्बर्ट सहित सभी विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में दीक्षारंभ से शुरू हुई नये विद्यार्थियों की संस्कारशाला

गोरखपुर, 16 जुलाई। भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अनुशासन, नवाचार, परिसर संस्कृति और मानव सेवा के भाव से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। अपने अभिनव शिक्षण पद्धति से बहुत ही कम समय में यह विश्वविद्यालय रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है।

डॉ. सिंह मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यहां प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी बहुत ही सौभाग्यशाली हैं। यहां विद्यार्थियों को संस्कार और अद्यानुतन तकनीक के साथ शिक्षित होकर सशक्त नागरिक बनने का अवसर प्राप्त होगा। दीक्षारंभ समारोह में सम्मिलित सभी नवांकुरों के उच्च शिक्षा के प्रथम संस्कार की बधाई देते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि पूर्ण विश्वास है किआप सभी इस विश्वविद्यालय की मान मर्यादा को अपने नवाचारों से और प्रतिष्ठत करेंगे।

नवागत विद्यार्थियों का परिसर में स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके अंतर्गत संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने चार वर्षों की यात्रा में कई प्रतिमान स्थापित किए हैं। यहां के शिक्षकों के कुशल नेतृत्व में निरंतर नवाचारों से कई विषयों में अन्वेषण जारी है। डॉ. राव ने कहा कि अनुशासन की ताप में तपे यहां के विद्यार्थी अन्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहे हैं। इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देना है जो स्वचालित हो। जिसमे विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं अधिकारी स्वतः संज्ञान लेते हुए एक ऐसे विश्वविद्यालय का निर्माण करें जो लोकार्थ की भावना से ओत- प्रोत होते हुए सभी के लिए अनुकरणीय हो। उन्होंने कहा कि बड़े लक्ष्य के लिए अनुशासन, कार्य निष्ठा, स्वयं के कार्य के प्रति ईमानदारी, सात्विक भाव अर्पण होना चाहिए। दीक्षारंभ संस्कार की पहली पाठशाला है जहा पहली बार विश्वविद्यालय के आंगन में ज्ञान अर्जन के लिए गुरु शिष्य का

❖ अभिनव शिक्षण पद्धति से रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठित है यह विश्वविद्यालय❖चार वर्षों की यात्रा में विश्वविद्यालय ने स्थापित किये कई प्रतिमान -डॉ. राव

परिचय साक्षात्कार होता है। पूर्ण विश्वास है अकादमिक सत्र में नए विद्यार्थी विश्वविद्यालय का नाम अंतराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करेंगे ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने 1932 में शिक्षा के जिस बीज का अंकुरण किया था आज वह विशाल वट के रूप में स्थापित हो चुका है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ से नए विद्यार्थियों को एक-दूसरे को जानने का अवसर मिलता है। नए विद्यार्थी कोमल माटी के समान होते हैं, उन्हे जिस आकर में ढाला जायेगा वो उसी में ढल जायेंगे। इसलिए शिक्षकों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वे सभी विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुरूप भविष्य के लिए तैयार करें।

दीक्षारंभ समारोह में मुख्य अतिथि,कुलपति, कुलसचिव आदि ने मां सरस्वती, गुरु गोरखनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। धन्यवाद ज्ञापन नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य डॉ. डीएस अजीथा ने किया। दीक्षारंभ समारोह में प्रमुख रूप से फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, अधिष्ठता प्रो. सुनील कुमार सिंह, डॉ. विमल कुमार दूबे, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास यादव, धनंजय पांडेय, डॉ. आ... संदीप श्रीवास्तव, श्वे... के शिक्षक उपस्थि...

सोरायसिस रोग से बचा सकता है संतुलित आहार

गोरखपुर, अमृत विचार। सोरायसिस त्वचा से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जिसमें त्वचा के ऊपर एक मोटी परत बन जाती है। इसमें तेज खुजली होती है और कई बार ये घाव भी बना देती है। इस बीमारी के प्रति सतर्कता और जागरूकता बेहद जरूरी है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की बीएएमएस, सुश्रुत बैच की छात्रा सिमरन तिवारी ने सोरायसिस पर किए गए शोध में यह पता लगाया है कि संतुलित आहार के सेवन से सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। ओमेगा-3 वसीय अम्लो से युक्त खाद्य पदार्थ (वसाई मछली, अखरोट और अलसी आदि) सोरायसिस पैच की सूजन को कम करने मे कारगर हैं। सिमरन तिवारी ने अपना शोध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की डॉ. प्रिया एसआर नायर (क्रिया शारीर विभाग) और डॉ. प्रज्ञा सिंह (संहिता एवं सिद्धांत विभाग) के पर्यवेक्षण में किया है। सिमरन बताती हैं कि सोरायसिस एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अति सक्रिय हो जाती है। इस रोग में त्वचा पर कोशिकाएं तेजी से जमा होने लगती हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं के कम होने के कारण त्वचा की परत सामान्य से अधिक तेजी से बनने लगती है, साथ ही त्वचा पर पपड़ीदार और सूजन वाले घाव हो जाते हैं। यह शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है पर ज्यदातर खोपड़ी, कोहनी या घुटने आदि को प्रभावित करता है। डॉक्टर और वैज्ञानिक अब तक सोरायसिस के असल कारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। सोरायसिस का उपचार बीमारी के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है। सिमरन के शोध निष्कर्ष में कहा गया है कि बीमारी की रोकथाम में आहार और स्वच्छता का ध्यान बहुत जरूरी है। इसमें प्रोसेस्ड फूड, कोल्ड ड्रिंक, सैचुरेटिड एवं ट्रांसफैट युक्त भोजन का सेवन करने से बचना चाहिए। शराब सेवन, धूम्रपान और तंबाकू जैसे उत्पादों का सेवन करने से लक्षणों को गंभीर बना सकते है। इस रोग में विशेष रूप से त्वचा की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। सौम्य, सुगंधहीन, रसायन मुक्त उत्पादों का प्रयोग करके सोरायसिस के लक्षणों को रोका जा सकता है। कठोर साबुन और सर्फ का प्रयोग न करें क्योंकि ये लक्षणों को उग्र कर सकते हैं। त्वचा में नमी बनाए रखने के लिए एवं रूखी त्वचा से बचाने के लिए केमिकल फ्री मॉइश्चराइजर एवं लेप का उपयोग करें। इसके साथ ही पर्याप्त नींद लेना और तनाव से बचना भी आवश्यक है। यदि आप सोरायसिस जैसे लक्षण अनुभव करते हैं तो तुरंत डॉक्टर से मिलें, क्योंकि सोरायसिस का घरेलू इलाज करने के साथ-साथ चिकित्सक की सलाह भी बहुत जरूरी होती है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विवि की विशिष्ट पहचान : डॉ. जीएन सिंह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ से शुरू हुई नए विद्यार्थियों की संस्कारशाला

भास्कर ब्यूरो

गोरखपुर। भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अनुशासन, नवाचार, परिसर संस्कृति और मानव सेवा के भाव से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

डॉ. सिंह मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यहां प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी बहुत ही सौभाग्यशाली हैं। यहां विद्यार्थियों को संस्कार और अद्यानुतन तकनीक के साथ शिक्षित होकर सशक्त नागरिक बनने का अवसर प्राप्त होगा। दीक्षारंभ समारोह में सम्मिलित सभी नवांकुरो के उच्च शिक्षा के प्रथम संस्कार की बधाई देते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि पूर्ण विश्वास है किआप सभी

इस विश्वविद्यालय की मान मर्यादा को अपने नवाचारों से और प्रतिष्ठत करेंगे।

नवागत विद्यार्थियों का परिसर में स्वागत करते हुए कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके अंतर्गत संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने चार वर्षों की यात्रा में कई प्रतिमान स्थापित किए हैं। यहां के शिक्षकों के कुशल नेतृत्व में निरंतर नवाचारों से कई विषयों में अन्वेषण जारी है। डॉ. राव ने कहा कि अनुशासन की ताप में तपे यहां के विद्यार्थी अन्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहे हैं। इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देना है जो स्वचालित हो। जिसमे विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं अधिकारी स्वतः संज्ञान लेते हुए एक ऐसे विश्वविद्यालय का निर्माण करें जो लोकार्थ की भावना से ओत- प्रोत होते हुए सभी के लिए अनुकरणीय हो। दीक्षारंभ संस्कार की पहली पाठशाला है जहां पहली बार विश्वविद्यालय के आंगन में ज्ञान अर्जन के लिए गुरु शिष्य का परिचय साक्षात्कार होता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेयी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने 1932 में शिक्षा के जिस बीज का अंकुरण किया था आज वह विशाल वट के रूप में स्थापित हो चुका है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ से नए विद्यार्थियों को एक-दूसरे को जानने का अवसर मिलता है।

समाचार दर्पण

महायोगी गोरखनाथ विवि में लगाए गए 7 हजार पौधे

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। प्रदेश सरकार की तरफ से आज चलाए गए एक पेड़ मां के नाम वृहद पौधरोपण अभियान के तहत शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में सात हजार पौधे लगाए गए। उच्च शिक्षा, वन विभाग, नागरिक सुरक्षा कोर एवं एनसीसी महानिदेशालय द्वारा पौधरोपण अभियान का शुभारंभ कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने पौधा लगाकर किया।

कुलपति डॉ. वाजपेयी ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए पौधरोपण अति आवश्यक हैं। कुलसचिव डॉ. राव ने कहा कि हम सभी मिलकर पेड़ों की घटती संख्या को बढ़ाकर पर्यावरण को बचाने में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करें। डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, धनन्जय पाण्डेय, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्वयंसेवकों ने किया पौधरोपण

गोरखपुर। बाबू पुरुषोत्तम दास राधा रमण दास महाविद्यालय के एनएसएस द्वारा 'एक पेड़ मां के नाम' कार्यक्रम के तहत पौधरोपण किया गया। प्राचार्य डॉ. विकास रंजन मणि त्रिपाठी ने बताया कि अमरूद, आम, लीची के फलदार एवं बरगद, नीम के छायादार पौधे लगाए गए। प्राचार्य ने पर्यावरण सुरक्षा एवं स्वच्छता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ. देव चंद प्रज्ञा, हरिशचंद्र सिंह, रीतेश मिश्र, शिव सहाय श्रीवास्तव, सुरेंद्र मिश्र, मोनू, उषा आदि मौजूद रहे।

एनडीआरएफ की टीम ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के स्टूडेंट को दिया प्रशिक्षण

संजय कुमार । दबंग इंडिया

गोरखपुर । देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए।

11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में गोरखपुर में आज दिनांक 20.7. 2024 को एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली वह आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया कमांडेंट संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली , भूस्खलन, भूकंप ,बाढ़ ,आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र-छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया ।

एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे। इस अवसर पर महा योगी गोरखनाथ के विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल बाजपेई कुल सचिव डॉ प्रदीप कुमार राव एनसीसी एएनओ डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव व कॉलेज समस्त स्टूडेंट मौजूद रहे।

आपदा से निपटने के लिए एनडीआरएफ की टीम ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम बालापार में कॉलेज के स्टूडेंट को किया प्रशिक्षण

सुनहरा संसार संवाददाता

गोरखपुर। देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए 11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में गोरखपुर में आज दिनांक 20.7. 2024 को एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली वह आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया कमांडेंट श्री संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली , भूस्खलन, भूकंप , बाढ़ , आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक ्सूं३८ ु४'ल्लिं स्त्र१ड्ड१ (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फामेर्सी विभाग के छात्र- छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही में बाढ़ के दौरान किन -किन उपकरणों का प्रयोग कर लोगो को कैसे बचाया जा सके यह भी बारीकी से समझाया इसमें आग जैसी आपदाओं में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया और साथ ही आपदाओं में प्रयोग किए जाने वाले रेस्क्यु तकनीकी फंसे हुए लोगों को निकालना उन्हें प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया गया। एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे।

समाचार दर्पण

बॉयोटेक्नोलॉजी में शोध और रोजगार की अपार संभावनाएं

गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का आरएमआरसी के वैज्ञानिक डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमिस्ट्री और माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में शोध एवं रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

डॉ. मिश्रा ने कहा कि बॉयोटेक्नोलॉजी विषय के अध्येता मेडिकल से जुड़ी इंडस्ट्री में स्वयं को स्थापित कर सकते हैं। बॉयोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ.अनुपमा ओझा ने आरएमआरसी के डॉ. मिश्रा को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में बॉयोटेक्नोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉ. अमित दुबे, डॉ. अवेद्यनाथ सिंह, डॉ. पवन कन्नौजिया, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव, डॉ. केके यादव, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. अंकिता मिश्रा व अनिल मिश्रा की सहभागिता रही।

गोरखनाथ विवि में व्याख्यान में वक्तव्य देते आरएमआरसी के डॉ बृज रंजन मिश्रा।

■ स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशी छात्रों का विशेषज्ञ ने किया मार्गदर्शन

बॉयोटेक्नोलॉजी एवं बॉयोकेमिस्ट्री में शोध और रोजगार की की अपार संभावनाएं : डॉ. मिश्रा

महायोगी गोरखनाथ विवि के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशी छात्रों का विशेषज्ञ ने किया मार्गदर्शन

संवाददाता

गोरखपुर, 22 जुलाई । महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों को विज्ञान के विविध शाखाओ में रोजगार और शोध के संबंध में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित आरएमआरसी के वैज्ञानिक डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमिस्ट्री आए माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में शोध एवं रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

डॉ. मिश्रा ने कहा कि बॉयोटेक्नोलॉजी के जरिये अभियान्त्रिकी और तकनीकी के डाटा और विधियों को जीवों और जीवनतंत्रों से संबंधित अध्ययन किया जाता है। इससे कई समस्याओं का समाधान भी निकाला जाता है। इस विषय के अध्येता मेडिकल इससे जुड़ी इंडस्ट्री में स्वयं को स्थापित कर सकते हैं। यह संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है। इस अवसर पर बॉयोकेमिस्ट्री की विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपमा ओझा डॉ. मिश्रा को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में बॉयोटेक्नोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दूबे, डॉ. अवेद्यनाथ सिंह, डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. केके यादव, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. अंकिता मिश्रा, अनिल मिश्रा सहित सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी मातृ तुल्य हैं: अरविंद सिंह

☐ गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स की खेती के अनुकूल : उप निदेशक कृषि
☐ एफपीओ से जुड़कर कार्य करें कृषि संकाय के विद्यार्थी

पौधरोपण करते कृषि निदेशक अरविंद सिंह

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए आयोजित व्याख्यान को संबोधित करते हुए उप निदेशक कृषि अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स (मोटे अनाज) की खेती के अनुकूल हैं। कम समय और कम खर्चे में किसान मोटे अनाज के पैदावार से अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। मोटे अनाज स्वास्थ के लिए भी काफी बेहतर होते हैं। उन्होंने कहा कि कृषि विधा में ली गयी शिक्षा व्यक्ति के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है। कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि एवं कृषकों के उन्नयन के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। उन्होंने कृषि के महत्व को चरितार्थ करते हुए कहा कि भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी ममां तुल्य हैं।

उप कृषि निदेशक ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों से प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से मान्यता प्राप्त एफपीओ (कृषि उत्पादक संगठन) से जुड़ने का आवाहन किया।

व्याख्यान के पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और उप कृषि निदेशक अरविंद कुमार सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण किया। इस मौके पर कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. एस. प्रेमकुमारी एवं विद्यार्थियों के साथ कृषि विभाग के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

गोरखपुर व आसपास के जिले मिलेट्स की खेती के लिए अनुकूल : अरविंद

निष्पक्ष प्रतिदिन ।गोरखपुर

उप निदेशक कृषि अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स (मोटे अनाज) की खेती के अनुकूल हैं। कम समय और कम खर्चे में किसान मोटे अनाज के पैदावार से अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। मोटे अनाज स्वास्थ्य के लिए भी काफी बेहतर होते हैं।उप निदेशक कृषि बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए आयोजित व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विधा में ली गयी शिक्षा व्यक्ति के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है। कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। श्री सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि एवं कृषकों के उन्नयन के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। उप कृषि निदेशक नें परम्परागत कृषि के साथ-साथ आधुनिक कृषि प्रणाली के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

श्री सिंह ने कृषि के महत्व को चरितार्थ करते हुए कहा कि भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी ममां तुल्य हैं। उन्होंने कहा कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय की सराहना करते हुए कहा कि कृषि शिक्षा क्षेत्र में यह संकाय अहम भूमिका निभा रहा है। यहां मौजूद आधारभूत सुविधाएं विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है। उप कृषि निदेशक ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों से प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से मान्यता प्राप्त एफपीओ (कृषि उत्पादक संगठन) से जुड़ने का आवाहन किया। व्याख्यान के पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और उप कृषि निदेशक अरविंद कुमार सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण किया। इस मौके पर कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, सहायक आचार्य डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. एस. प्रेमकुमारी एवं विद्यार्थियों के साथ कृषि विभाग के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों को संबोधित करते उप निदेशक कृषि। • हिन्दुस्तान

गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स की खेती के अनुकूल

गोरखपुर, मुख्य संवाददाता। उप निदेशक कृषि डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स (मोटे अनाज) की खेती के अनुकूल हैं। मोटे अनाज स्वास्थ के लिए भी काफी बेहतर होते हैं।

- महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में उप निदेशक कृषि डॉ. अरविंद सिंह ने दिया व्याख्यान
- बोले- कृषि के क्षेत्र में रोजगार और स्वरोजगार की हैं अपार सम्भावनाएं

डॉ अरविंद सिंह बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों से प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से मान्यता प्राप्त एफपीओ (कृषि उत्पादक संगठन) से जुड़ने का आह्वान किया। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और उप कृषि निदेशक अरविंद कुमार सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण किया। इस मौके पर कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ कुलदीप सिंह, डॉ विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष पाठक, डॉ. एस प्रेमकुमारी आदि उपस्थित रहे।

गोरखपुर व आसपास के जिले मिलेट्स की खेती के लिए अनुकूल

- महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में उप निदेशक कृषि का व्याख्यान

गोरखपुर (एसएनबी)। उप निदेशक कृषि अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर और आसपास के जनपद मिलेट्स (मोटे अनाज) की खेती के लिए अनुकूल हैं। कम समय और कम खर्च में किसान मोटे अनाज के पैदावार से अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। मोटे अनाज स्वास्थ के लिए भी काफी लाभकारी होते हैं।

महायोगी गोरखनाथ विवविद्यालय के कृषि संकाय में नवप्रवेशित छात्रों के लिए आयोजित व्याख्यान को उप निदेशक कृषि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विधा में ली गयी शिक्षा व्यक्ति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है। कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। श्री सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि एवं कृषकों के उन्नयन के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। श्री सिंह ने कृषि के महत्व को चरितार्थ करते हुए कहा कि भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी मां तुल्य हैं। उन्होंने कहा कि गोरखनाथ विवविद्यालय के कृषि संकाय की सराहना करते हुए कहा कि कृषि शिक्षा क्षेत्र में यह संकाय अहम भूमिका निभा रहा है।

महायोगी गोरखनाथ विवि.में आयोजित कार्यक्रम में पौधरोपण करते कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, साथ में उप कृषि निदेशक अरविंद कुमार सिंह।

यहां मौजूद आधारभूत सुविधाएं विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है। व्याख्यान के पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी और उप निदेशक कृअरविंद कुमार सिंह ने विवि परिसर में पौधरोपण किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता डा. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डा. कुलदीप सिंह, डा. विकास कुमार यादव, डा. आयुष कुमार पाठक, डा. एस् प्रेमकुमारी आदि मौजूद रहे।

मिलेट्स की खेती के अनुकूल है गोरखपुर

संदेश वाहक न्यूज

गोरखपुर। उप निदेशक कृषि अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर और आसपास के जिले मिलेट्स (मोटे अनाज) की खेती के अनुकूल हैं। कम समय और कम खर्चे में किसान मोटे अनाज के पैदावार से अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। मोटे अनाज स्वास्थ के लिए भी काफी बेहतर होते हैं।

गोरखनाथ विश्वविद्यालय में पौधरोपण करते हुए उपनिदेशक कृषि व अन्य।

उप निदेशक कृषि बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए आयोजित व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विधा में ली गयी शिक्षा व्यक्ति के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है। कृषि के क्षेत्र में रोजगार व स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। श्री सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि एवं कृषकों के उन्नयन के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। उप कृषि निदेशक नें परम्परागत कृषि के साथ-साथ आधुनिक कृषि प्रणाली के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

श्री सिंह ने कृषि के महत्व को चरितार्थ करते हुए कहा कि भारतीय मनीषा में गौ और पृथ्वी ममां तुल्य हैं। उन्होंने कहा कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय की सराहना करते हुए कहा कि कृषि शिक्षा क्षेत्र में यह संकाय अहम भूमिका निभा रहा है। यहां मौजूद

- महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में उप निदेशक कृषि का व्याख्यान

आधारभूत सुविधाएं विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही है। उप कृषि निदेशक ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों से प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से मान्यता प्राप्त एफपीओ (कृषि उत्पादक संगठन) से जुड़ने का आवाहन किया।

करगिल विजय दिवस : सेना के शौर्य पर जश्न

गोरखपुर (एसएनबी)। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफ से भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिषता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। एनसीसी अधिकारी डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है। पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन प्रतियेगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल, भाषण प्रतियोगिता में श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अशिमता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डा. पवन कनौजिया एवं डा. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया।

कारगिल विजय दिवस पर महयोगी गोरखनाथ विवि में मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते एनसीसी कैडेट्स के साथ प्रो.सुनील सिंह,डा.पवन कनौजिया,डा.अंकिता मिश्र,डा.अनुपमा ओझा व अन्य।

एनसीसी कैडेट्स ने योद्धाओं को किया नमन

महायोगी गोरखनाथ विवि में कारगिल विजय दिवस पर हुआ खास आयोजन

गोरखपुर (विधान केसरी)। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफसे भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है।

पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण प्रतियोगिता में श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अशिमता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डॉ. पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया। आयोजन में प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दूबे, डॉ. धीरेंद्र, डॉ. प्रेरणा अदिति, धनंजय पांडेय आदि उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर शुक्रवार को दीनदयाल उपाध्याय गोरखनाथ विश्वविद्यालय की शिक्षकों और एनसीसी कैडेट ने कैंडल जलाकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। ● हिन्दुस्तान

एनसीसी कैडेट ने योद्धाओं को किया नमन

गोरखपुर। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफ से भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है। पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर , पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण में, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डॉ.पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा रहे।

भाजपाइयों ने गौतम गुरुं

गोरखपुर। भाजपा महानगर के कार्यकत
पर अमर शहीद लेफ्टिनेंट गौतम गुरुंग
किया। प्रदेश उपाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने कह
त्याग की भावना पर हमें गर्व है। यह दिन
है जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों
अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने कहा कि मां भारत
बलिदान देने वाले अमर जवानों को नमन
महामंत्री ओम प्रकाश शर्मा, उपाध्यक्ष रमे
श्रीवास्तव, शिवम पाण्डेय, महानगर मंत्री
मीडिया प्रभारी बच्चा पांडे नवीन, जितेंद्र
सिंह, वृज किशोर राय आदि मौजूद रहे।

24 जुलाई से 31 जुलाई तक मनाए जा... बचने के लिए ओआरएस काफी उपयोगी है।

चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद पद्धति अग्रणी

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र का शुभारंभ

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विवि आरोग्याम के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि आयुर्वेद, प्राचीन काल से वर्तमान समय तक चिकित्सा के क्षेत्र में हरदम आगे रहा है। महायोगी गोरखनाथ विवि से संबद्ध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कलेज) आयुर्वेद की समृद्ध परंपरा से जुड़कर इस पद्धति को अध्ययन और चिकित्सा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्यरत है। डा. राव शुक्रवार को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच (2022-23) के द्वितीय सत्र के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। दीप प्रज्वलन एवं धन्वंतरि वंदना के बाद कुलसचिव डा. राव ने सभी विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का महत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इस अवसर पर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के, डॉ. गोपीकृष्णा, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ.मीनी केवी, डॉ. देवी आर नायर, डॉ. शांतिभूषण हंदूर, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ.परीक्षित, डॉ.सार्वभौम, सावीनन्दन पाण्डेय एवं सुश्रुत बैच (2022-23) के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आयोजन | गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र का शुभारंभ

निरंतर बढ़ रहा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का महत्व

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का महत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय से संबद्ध गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) आयुर्वेद की समृद्ध परंपरा से जुड़कर इस पद्धति को अध्ययन और चिकित्सा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्यरत है।

शुक्रवार को डॉ. राव आयुर्वेद कॉलेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच (2022-23) के द्वितीय सत्र के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। दीप प्रज्वलन एवं धन्वंतरि वंदना के बाद कुलसचिव डॉ. राव ने सभी विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के, डॉ. गोपीकृष्णा, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. मीनी केवी, डॉ. देवी आर नायर, डॉ. शांतिभूषण हंदूर, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. परीक्षित, डॉ. सार्वभौम, साध्वीनन्दन पाण्डेय एवं सुश्रुत बैच (2022-23) के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कॉलेज में बीएएमएस के द्वितीय वर्ष के बैच के लिए आयोजित जागरूकता सत्र का उद्घाटन कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव ने किया।

यौन शौषण पर तोड़नी होगी चुप्पी : शीलम

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज में दीक्षारंभ कार्यक्रम में शुक्रवार को शीलम वाजपेयी ने बाल यौन शोषण और जागरूकता विषय पर व्याख्यान दिया। श्रीमती वाजपेयी ने यौन शोषण को पहचानने, उसके खिलाफ आवाज उठाने और रोकने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करते हुए कहा कि हम सभी को यौन शोषण जैसे संवेदनशील मुद्दे पर चुप्पी तोड़नी होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता पैरामेडिकल के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव ने की।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र का दीप जलाकर शुभारंभ करते मगोवि के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव : सौ. मगोवि

चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद पद्धति अग्रणी : डा. प्रदीप राव

जासं, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि आयुर्वेद, प्राचीन काल से वर्तमान समय तक चिकित्सा के क्षेत्र में हमेशा आगे रहा है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आयुर्वेद की समृद्ध परंपरा से जुड़कर इस पद्धति को अध्ययन और चिकित्सा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

डा. राव शुक्रवार को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। दीप प्रज्वलन एवं धन्वंतरि वंदना के बाद कुलसचिव डा. राव ने सभी विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का महत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इसके अध्ययन से नवाचार, अनुसंधान और चिकित्सा के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि इन्हीं संभावनाओं को देखते हुए महायोगी गोरखनाथ विवि आयुर्वेद की शिक्षा व चिकित्सा के स्तर को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इंस्टीट्यूट के कार्यवाहक प्राचार्य डा. नवीन के., डा. गोपीकृष्णा, डा. रश्मि पुष्पन, डा. मीनी केवी, डा. देवी आर नायर, डा. शांतिभूषण हंदूर आदि मौजूद रहे।

प्राचीन से वर्तमान तक आयुर्वेद पद्धति सबसे आगे : डॉ. प्रदीप

अमर उजाला ब्यूरो

आयुर्वेद कॉलेज में बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र का शुभारंभ

गोरखपुर। आयुर्वेद प्राचीन काल से वर्तमान समय तक चिकित्सा के क्षेत्र में हरदम आगे रहा है। इसमें नवाचार, अनुसंधान और चिकित्सा के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इन्हीं संभावनाओं को देखते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने आयुर्वेद की शिक्षा व चिकित्सा के स्तर को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

ये बातें महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहीं। वे शुक्रवार को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में बीएएमएस सुश्रुत बैच (2022-23) के द्वितीय सत्र के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। दीप प्रज्वलन एवं धन्वंतरि वंदना के बाद कुलसचिव डॉ. राव ने सभी विद्यार्थियों को नए सत्र की शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. नवीन के, डॉ. गोपीकृष्णा, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. मीनी केवी आदि मौजूद रहे।

यौन शौषण पर तोड़नी होगी चुप्पी : शीलम वाजपेयी

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कालेज में दीक्षारंभ कार्यक्रम में शुक्रवार को शीलम वाजपेयी ने बाल यौन शोषण और जागरूकता विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने यौन शोषण को पहचानने, उसके खिलाफ आवाज उठाने और रोकने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करते हुए कहा कि हम सभी को यौन शोषण जैसे संवेदनशील मुद्दे पर चुप्पी तोड़नी होगी। यह भी बताया कि किन उपायों से इसकी सूचना पुलिस व प्रशासन को दी जा सकती है। अध्यक्षता कालेज के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव ने की।

समाचार दर्पण

टीबी के निदान में आयुर्वेद कारगर

संवाददाता, गोरखपुर

अमृत विचार। विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेद महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने कहा कि क्षय रोग (टीबी) के प्रबंधन में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बेहद कारगर है। डॉ. तोमर शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस आयुर्वेद कॉलेज के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'क्षय रोग का निदान-आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषयक व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2030 तक विश्व को टीबी मुक्त करने की योजना बनाई है। जबकि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2025 तक ही भारत को टीबी मुक्त करने का संकल्प लिया है। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में आयोजित निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर ने 165 मरीजों को परामर्श दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में वर्णित आदर्श जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा, योग और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का भी शत प्रतिशत उपचार संभव है।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. जीएस तोमर। अमृत विचार

क्षय रोग प्रबंधन में आयुर्वेद कारगर

गोरखपुर (एसएनबी)। विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेद महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डा. जीएस तोमर ने कहा कि क्षय रोग (टीबी) के प्रबंधन में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बेहद कारगर है। आयुर्वेद में हजारों वर्षो से इस रोग के कारण, लक्षण और उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है।

डा. तोमर शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के तहत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कालेज) के रोग निदान एवं विति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'क्षय रोग का निदान-आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषयक व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2030 तक विश्व को टीबी मुक्त करने की योजना बनाई है। जबकि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2025 तक ही भारत को टीबी मुक्त करने का संकल्प लिया है। उनका मानना है कि यह लक्ष्य आयुष की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। उनके निर्देश पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं आयुष मंत्रालय के बीच एमओयू हुआ है। डा. तोमर ने बताया कि आयुर्वेद में टीबी रोग को राजयक्ष्मा कहा गया है। जब रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तब माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलाई नामक जीवाणु संक्रमण द्वारा इस रोग को उत्पन्न करता है। उन्होंने कहा कि आजकल क्षय रोगियों की संख्या में हो रही वृद्धि ही नहीं बल्कि मल्टी ड्रग रजिस्टेन्ट ट्युबरकुलोसिस सबसे बड़ी चिंता का विषय है। उन्होंने परामर्श देते हुए कहा कि पोषक आहार एवं सही जीवनशैली के साथ आयुर्वेद में वर्णित व्याधिक्षमत्व वर्धक औषधियों के प्रयोग से न केवल एन्टी ट्युबरकुलर ट्रीटमेंट की अवधि को कम किया जा सकता है अपितु इनके घातक दुष्प्रभावों से बचाते हुए प्रयुक्त आधुनिक औषधियों की प्रभावकारिता को भी बढ़ाया जा सकता है।

■ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस के विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष का व्याख्यान

आयुवेदीय व्याधिक्षमत्व वधक औषधियो के प्रयोग से क्षय मुक्त भारत का सपना साकार होगा : डॉ तोमर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ के आयुर्वेद संकाय में 'क्षय रोग का निदान एवं उपचार- आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषय पर व्याख्यान में प्रो.(डॉ.) गिरेन्द्र सिंह तोमर ने दिया क्षय मुक्त भारत का मंत्र

गोरखपुर (एजेन्सी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीटच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आयुर्वेद संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान 'क्षय रोग का निदान एवं उपचार-आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषय पर विशिष्ट अतिथि डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर, पूर्व अन्तर्राष्टीय अध्यक्ष विश्व आयुर्वेद मिशन ने विद्यार्थियों को क्षय रोग से बचाव पर पर व्याख्यान दिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2030 तक विश्व के टीबी मुक्त करने की योजना बनाई है। वहीं हमारे प्रधानमंत्री महोदय ने वर्ष 2025 तक भारत को टीबी मुक्त करने का संकल्प लिया है। उनका मानना है कि यह लक्ष्य आयुष की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। अतः उनके निर्देश पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं आयुष मंत्रालय के बीच एमओयू हुआ है। ज्ञातव्य हो कि डॉ तोमर वर्तमान में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन आयुष-एनटीईपी प्रोग्राम के तकनीकी समूह के सदस्य भी हैं। डॉ तोमर ने बताया कि आयुर्वेद में ट्युबरकुलोसिस को राजयक्ष्मा कहा गया है। जिसके कारणों में विषम भोजन, वेगों को रोकना, धातुक्षय एवं अतिसाहस के कारण फेंफड़ो में हुई क्षति को बताया गया है। इन कारणों से जब रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तब माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलाई नामक जीवाणु संक्रमण द्वारा इस रोग को उत्पन्न करता है। आयुर्वेद में हजारों वर्षो से इस रोग का विस्तृत वर्णन मिलता है। आजकल क्षय रोगियों की संख्या में निरन्तर हो रही वृद्धि ही नहीं मल्टी ड्रग रजिस्टेन्ट ट्युबरकुलोसिस सबसे बड़ी चिंता का विषय है। डॉ तोमर का मानना है कि पोषक आहार एवं सही जीवनशैली के साथ साथ आयुर्वेद में वर्णित व्याधिक्षमत्व वर्धक औषधियों के प्रयोग से न केवल एन्टी ट्युबरकुलर ट्रीटमेंट की अवधि को कम किया जा सकता है अपितु इनके घातक दुष्प्रभावों से बचाते हुए प्रयुक्त आधुनिक औषधियों की प्रभावकारिता को भी बढ़ाया जा सकता है। यही नहीं एमडीआर टीबी को भी आयुर्वेद औषधियों को साथ में प्रयोग करके रोका जा सकता है। उन्होंने स्वर्ण वसन्त मालती रस, यक्ष्मारि लौह, शिलाजत्वादि लौह के साथ साथ च्यवनप्राश व पिप्पली क्षीरपाक के सफलतम परिणामों के बारे में भी अपने अनुभव साझा किए। डॉ तोमर ने आगे कहा कि आयुर्वेद में अश्वगंधा, शतावरी, गिलोय, तुलसी, रुदन्ती, बला, मुलैठी, काली मरिच, सोंठ, हल्दी एवं पिप्पली जैसी अनेक इम्यूनोमोड्यूलेटर औषधियाँ उपलब्ध हैं जो क्षय रोग के नियंत्रण में संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं। उन्होंने यह सुझाव राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन के तकनीकी समूह में भी रखे हैं। जिससे क्षय रोग पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य डॉ नवीन कोडलाडी, रोग निदान विभाग के प्रो. गोपीकृष्ण, प्रो शांति भूषण, प्रो गिरिधर वेदान्तम, डॉ सन्ध्या पाठक एवं डॉ सार्वभौम सहित सुश्रुत सत्र के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सुश्रुत सत्र की छात्रा कुमारी कोमल गुप्ता ने किया।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुक्ल आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 165 मरीज

गोरखपुर। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी. एस. तोमर ने 165 मरीजों को निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया। डॉ जी एस तोमर ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आज दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद वर्णित आदर्श जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है। योग, प्राणायाम, और ध्यान के साथ नियमित चिकित्सीय परामर्श से रोगी निरोग रहकर स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित निशुल्क शिविर में उन्होंने कहा कि आज के समय में अस्थमा, स्पाइन, गठिया और अन्य समस्याएं खान पान अनियमित दिनचर्या से उत्पन्न हो रही हैं। आसपास की जड़ी बूटियां से और खान-पान में सुधार करके हम अपना स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

The dream of a TB-free India will be realised by adopting nutritious food, proper lifestyle and the use of Ayurvedic immunity-enhancing medicines - Dr G S Tomar

In a lecture on "Diagnosis and treatment of tuberculosis - Ayurvedic perspective" at the Ayurveda Faculty of Guru Gorakshanath Institute of Medical Sciences, Prof. (Dr.) Girendra Singh Tomar gave the mantra of a tuberculosis-free India

JUSTICE EXPRESS

In a lecture organized by Guru Gorakhnath Institute of Medical Sciences, Faculty of Ayurveda, operating under Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur, on the topic "Diagnosis and Treatment of Tuberculosis - Ayurvedic Perspective", special guest Dr. Girendra Singh Tomar, former International President, Vishwa Ayurveda Mission, gave a lecture to the students on prevention of tuberculosis. The World Health Organization has planned to make the world TB free by the year 2030. At the same time, our Prime Minister has pledged to make India TB free by the year 2025. He believes that this goal is not possible without the participation of AYUSH. Therefore, on his instructions, an MoU has been signed between the Ministry of Health and Family Welfare and the Ministry of AYUSH. It is worth noting that Dr. Tomar is currently also a member of the technical group of AYUSH-NTEP program under the Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. Dr. Tomar told that tuberculosis is called Rajyayakshma in Ayurveda. The causes of this are said to be unhealthy food, suppression of urges, Dhatukshya and damage to the lungs due to over-exertion. When the patient's immunity reduces due to these reasons, then a bacterium called Mycobacterium tuberculosis causes this disease through infection. Detailed description of this disease is found in Ayurveda for thousands of years. Nowadays, not only the continuous increase in the number of tuberculosis patients but also multi-drug resistant tuberculosis is the biggest cause of concern. Dr. Tomar believes that by using nutritious food and proper lifestyle along with the immunity enhancing medicines described in Ayurveda, not only the duration of anti-tubercular treatment can be reduced but the effectiveness of the modern medicines used can also be increased by protecting from their fatal side effects. Not only this, MDR TB can also be prevented by using Ayurvedic medicines together. He also shared his experiences about the successful results of Swarn Basant Malti Ras, Yaksmari Loha, Shilajatwaadi Loha along with Chyavanprash and Pippali Ksheerpak. Dr Tomar further said that many immunomodulator medicines like Ashwagandha, Shatavari, Giloy, Tulsi, Rudanti, Bala, Mulethi, Black Pepper, Dry Ginger, Turmeric and Pippali are available in Ayurveda which can prove to be a lifesaver in controlling tuberculosis. He has also put forward this suggestion in the technical group of National Tuberculosis Eradication. So that tuberculosis can be effectively controlled.

In the guest lecture, Principal in-charge of Ayurveda College Dr. Naveen Kodladi, Prof. Gopikrishna of the Department of Diagnosis, Prof. Shanti Bhushan, Prof. Giridhar Vedantam, Dr. Sandhya Pathak and Dr. Sarvabhauma along with all the students of Sushruta session were present. The program was conducted by Kumari Komal Gupta, a student of Sushruta session.

165 patients were seen in the free Ayurvedic health camp at Guru Gorakshanath Institute of Medical Sciences, Balapar

Dr. G.Y.S. Tomar gave free medical consultation to 165 patients in the free Ayurveda medical camp at Guru Gorakhnath Institute of Medical Sciences, Balapar.

Dr. G.S. Tomar said that Ayurveda is the world's oldest medical system. Today the world is rapidly following Ayurveda medicine. If attention is paid to the ideal lifestyle, naturopathy, and diet described in Ayurveda, then the treatment of complex and serious diseases is 100 percent possible. With regular medical consultation along with yoga, pranayama, and meditation, patients can live a healthy life by staying disease-free. In a free camp organized by Guru Gorakshanath Institute of Medical Sciences, he said that in today's time, asthma, spine, arthritis and other problems are arising due to irregular eating habits. We can live a healthy life with the help of herbs available around us and by improving our eating habits.

समाचार दर्पण

क्षय रोग के प्रबंधन में बेहद कारगर है आयुर्वेद : डॉ. जीएस तोमर

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष का व्याख्यान

गोरखपुर। विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेद महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने कहा कि क्षय रोग (टीबी) के प्रबंधन में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बेहद कारगर है। आयुर्वेद में हजारों वर्षों से इस रोग के कारण, लक्षण और उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है। डॉ. तोमर शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'क्षय रोग का निदान-आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषयक व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 30 तक विश्व को टीबी

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 25 तक ही भारत को टीबी मुक्त करने का संकल्प लिया है। उनका मानना है कि यह लक्ष्य आयुष की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। उनके निर्देश पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

हुआ है।

डॉ. तोमर ने बताया कि आयुर्वेद में टीबी रोग को राजयक्ष्मा कहा गया है। जब रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तब माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलाई नामक जीवाणु संक्रमण

व्याख्यान में आयुर्वेद कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य डॉ. नवीन के., रोग निदान विभाग के प्रो. गोपीकृष्णा, प्रो. शांति भूषण, प्रो. गिरिधर वेदांतम, डॉ. सन्ध्या पाठक एवं डॉ. सार्वभौम सहित सुश्रुत बैच के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

निशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर में डॉ. तोमर ने दिए 165 मरीजों को परामर्श

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में आयोजित निशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर ने 165 मरीजों को परामर्श दिए। इस दौरान उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में वर्णित आदर्श जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा, योग और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का भी शत प्रतिशत उपचार संभव है।

क्षय रोग के प्रबंधन में कारगर है आयुर्वेद : डॉ. जीएस तोमर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष का व्याख्यान

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेद महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने कहा कि क्षय रोग (टीबी) के प्रबंधन में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बेहद कारगर है। आयुर्वेद में हजारों वर्षों से इस रोग के कारण, लक्षण और उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है।

डॉ. तोमर शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद कॉलेज) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'क्षय रोग का निदान-आयुर्वेदीय दृष्टिकोण' विषयक व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2030 तक विश्व को टीबी मुक्त करने की योजना बनाई है। जबकि भारत सरकार ने

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में शुक्रवार को बीएएमएस सुश्रुत बैच के द्वितीय सत्र का शुभारंभ करते डॉ प्रदीप राव। संवाद

वर्ष 2025 तक ही भारत को टीबी मुक्त करने का संकल्प लिया है। यह लक्ष्य आयुष की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। उनके निर्देश पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं आयुष मंत्रालय के बीच एमओयू हुआ है।

डॉ. तोमर ने बताया कि आयुर्वेद में टीबी रोग को राजयक्ष्मा कहा गया है। जब रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, तब माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलाई नामक जीवाणु संक्रमण इस रोग को उत्पन्न करता है।

आजकल क्षय रोगियों मल्टी ड्रग रजिस्टेंट ट्युबरकुलोसिस सबसे बड़ी चिंता का विषय है। पोषक आहार एवं सही जीवनशैली के साथ आयुर्वेद में वर्णित व्याधिक्षमत्व वर्धक औषधियों के प्रयोग से न केवल एंटी ट्युबरकुलर ट्रीटमेंट की अवधि को कम किया जा सकता है अपितु इनके घातक दुष्प्रभावों से बचाते हुए प्रयुक्त आधुनिक औषधियों की प्रभावकारिता को भी बढ़ाया जा सकता है। यही नहीं एमडीआर

टीबी को भी आयुर्वेद औषधियों को साथ में प्रयोग करके रोका जा सकता है।

डॉ. तोमर ने टीबी के उपचार हेतु स्वर्ण बसंत मालती रस, यक्ष्मारि लौह, शिलाजत्वादि लौह के साथ साथ च्यवनप्राश व पिप्पली क्षीरपाक के सफलत परिणामों के बारे में भी अपने अनुभव साझा किए।

उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में अश्वगंधा, शतावरी, गिलोय, तुलसी, रुदंती, बला, मुलैठी, काली मिर्च, सोंठ, हल्दी एवं पिप्पली जैसी अनेक इम्युनोमॉड्यूलेटर औषधियां उपलब्ध हैं जो क्षय रोग के नियंत्रण में संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं।

'संगीत और चिकित्सा विज्ञान में गहरा रिश्ता'

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में नए विद्यार्थियों के लिए चल रही कार्यशाला के तहत शनिवार को विज्ञान और संगीत के अंतःसंबंध पर संगीत विशेषज्ञ डॉ. मिथिलेश तिवारी ने छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि संगीत विषय नहीं बल्कि आराधना है और इसका चिकित्सा विज्ञान में गहरा रिश्ता है। डॉ. मिथिलेश तिवारी ने कहा कि संगीत और विज्ञान दोनों ही मानव जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं और हमारे समाज, संस्कृति व जीवनशैली को गहराई से प्रभावित किया है। संगीत का मानव मस्तिष्क और भावनाओं पर गहरा प्रभाव होता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सुनने या बजाने से मानसिक तनाव कम होता है। ब्यूरो

धनंजय चुने गए मिस्टर फ्रेशर, पूर्वा मिस फ्रेशर

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पैरामेडिकल कॉलेज में दीक्षारंभ कक्षाओं का समापन मंगलवार को फ्रेशर्स पार्टी के साथ हुआ। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच धनंजय विश्वकर्मा मिस्टर फ्रेशर चुने गए जबकि मिस फ्रेशर का खिताब पूर्वा श्रीवास्तव को मिला।कार्यक्रम का शुभारंभ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि आज से विद्यार्थियों के जीवन की नई शुरुवात होने जा रही है। पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक हैं। पाठ्यक्रम के समाप्ति के बाद विद्यार्थी न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशो में भी कार्य कर अपनी जीविका सुगमता से चला सकते हैं। कार्यक्रम में सीनियर बैच की तरफ से कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आभार ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा ने किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप, आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

धनंजय चुने गए मिस्टर फ्रेशर, पूर्वा मिस फ्रेशर

स्वतंत्र चेतना, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पैरामेडिकल कॉलेज में दीक्षारंभ कक्षाओं का समापन मंगलवार को फ्रेशर्स पार्टी के साथ हुआ। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच धनंजय विश्वकर्मा मिस्टर फ्रेशर चुने गए जबकि मिस फ्रेशर का खिताब पूर्वा श्रीवास्तव को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि आज से विद्यार्थियों के जीवन की नई शुरुवात होने जा रही है। पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक है। पाठ्यक्रम के समाप्ति के बाद विद्यार्थी न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशो में भी कार्य कर अपनी जीविका सुगमता से चला सकते हैं। कार्यक्रम में सीनियर बैच की तरफ से कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

आभार ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा ने किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप, आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

धनंजय चुने गए मिस्टर फ्रेशर, पूर्वा मिस फ्रेशर

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पैरामेडिकल कॉलेज

में दीक्षारंभ कक्षाओं का समापन मंगलवार को फ्रेशर्स पार्टी के साथ हुआ। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच धनंजय विश्वकर्मा मिस्टर फ्रेशर चुने गए जबकि मिस फ्रेशर का खिताब पूर्वा श्रीवास्तव को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि आज से विद्यार्थियों के जीवन की नई शुरुवात होने जा रही है। पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक हैं। पाठ्यक्रम के समाप्ति के बाद विद्यार्थी न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशो में भी कार्य कर अपनी जीविका सुगमता से चला सकते हैं। कार्यक्रम में सीनियर बैच की तरफ से कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आभार ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा ने किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप, आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

फ्रेशर्स पार्टी

गोरखपुर मे महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पैरामेडिकल कॉलेज मे दीक्षारंभ कक्षाओं का समापन मंगलवार को फ्रेशर्स पार्टी के साथ हुआ। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच धनंजय विश्वकर्मा मिस्टर फ्रेशर चुने गए जबकि मिस फ्रेशर का खिताब पूर्वा श्रीवास्तव को मिला। कार्यक्रम का उद्घाटन पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव ने दीप जलाकर किया। उन्होंने कहा कि पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक है। कार्यक्रम मे सीनियर बैच की तरफ से कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आभार ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा ने किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप, आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश आदि की सक्रिय सहभागिता रही। फोटो नंबर 4

अमृत विचार

धनंजय चुने गए मिस्टर फ्रेशर, पूर्वा मिस फ्रेशर

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पैरामेडिकल कॉलेज में दीक्षारंभ कक्षाओं का समापन मंगलवार को फ्रेशर्स पार्टी के साथ हुआ। इस दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच धनंजय विश्वकर्मा मिस्टर फ्रेशर चुने गए जबकि मिस फ्रेशर का खिताब पूर्वा श्रीवास्तव को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि आज से विद्यार्थियों के जीवन की नई शुरुवात होने जा रही है। पैरामेडिकल के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक हैं। पाठ्यक्रम के समाप्ति के बाद विद्यार्थी न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशो में भी कार्य कर अपनी जीविका सुगमता से चला सकते हैं। कार्यक्रम में सीनियर बैच की तरफ से कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आभार ज्ञापन अनूप कुमार मिश्रा ने किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अंकिता, सुप्रिया, आकांक्षा, अभिनव, संजीव, आकाश, संदीप, कुलदीप, आदित्य, आंचल, अदिति, अनुष्का, दिव्यांश आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

निर्माणाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन क्रीड़ांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

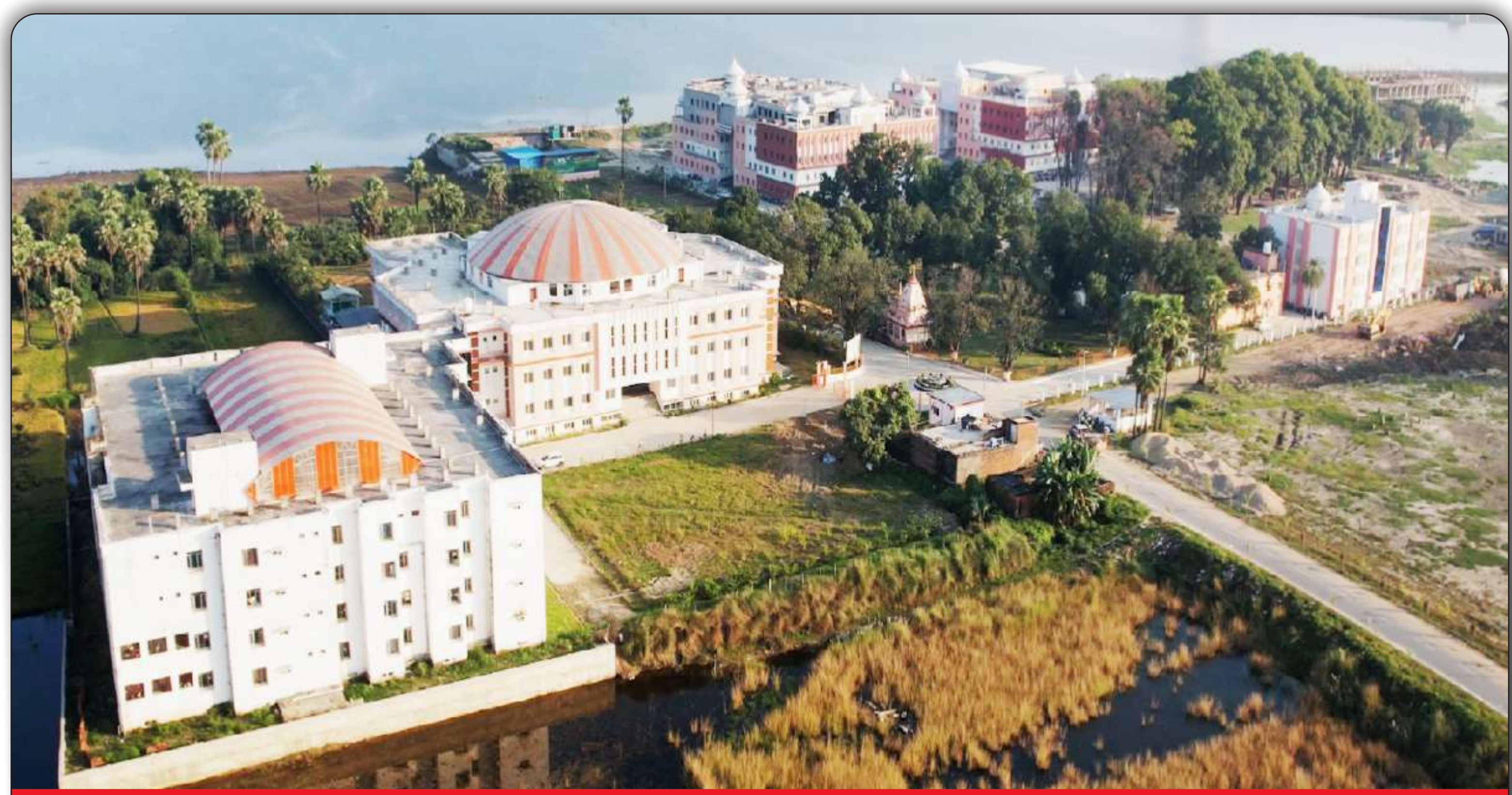

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

01 विद्यार्थियों को सम्बोधित करती हुई श्रीमती रीता श्रीवास्तव

02 सम्बोधित करते हुए इंस्पेक्टर दीपक मण्डल

03 सम्बोधित करती हुई डॉ. मिथिलेश तिवारी

04 विद्यार्थियो को सम्बोधित करती हुई डॉ. सोनी वर्मा

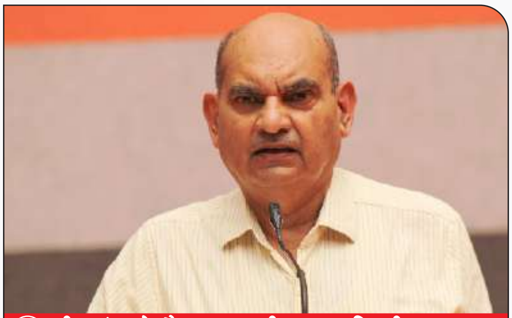
05 दीक्षारंभ के दौरान माननीय कुलपति जी

06 दीक्षारंभ के दौरान डॉ. जी. एन. सिंह

07 माननीय कुलपति, कुलसचिव एवं नागरिक सुरक्षा कोर की टीम

08 श्री अरविन्द माननीय कुलपति, प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी

09 विद्यार्थियों को सीपीआर की जानकारी देते हुए एनडीआरएफ की टीम

10 कार्यपरिषद की बैठक

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. प्रज्ञा सिंह, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय